# ईमान क्या है ?

पर्यवेक्षण

हज़रत मौलाना नेमतुल्लाह साहब आजमी

उस्ताज़ दारुल उलूम देवबंद

लेखक

तौहीद आलम क़ासमी बिजनोरी

उस्ताज़ दारुल उलूम देवबंद

प्रकाशक

इदारा फ़िकरो अमल देवबन्द

# ईमान क्या है?

संरक्षण में

हज़रत मौलाना नेमतुल्लाह साहब आज़मी
दामत बरकातुहुम
हदीस प्रोफेसर दारुल उलूम देवबन्द

लेखक

तौहीद आलम क़ासमी बिजनौरी
लेक्चरर
दारुल उलूम देवबन्द

प्रकाशक

**इदारा-ए-फ़िक्र व अमल देवबन्द**

**मिलनेकापता**

पुस्तकालयः- **इदारा-ए- फ़िक्र व अमल,देवबन्द (यूपी)**

संपर्क नंबर : +91 9760230025

| | | |
|---|---|---|
| नाम पुस्तक | : | ईमान क्या है? |
| लेखक | : | तौहीद आलम क़ासमी बिजनौरी |
| संरक्षण में | : | हज़रत मौलाना नेमतुल्लाह साहब आज़मी दामत बरकातुहुम |
| अनुवादक एवं कंपोज़र | : | डॉक्टर मुफ्ती मुहम्मद वसी मियाँ क़ासमी मुज़फ्फरनगरी |
| टाइप सेटिंग | : | मुहम्मद मुआविया क़ासमी आज़मी |
| प्रकाशन | : | जनवरी 2021 |
| कुल संख्या | : | 1100 |
| मूल्य | : | |
| प्रकाशक | : | इदारा-ए-फ़िक्र व अमल, देवबन्द (यूपी) |
| संपर्क नंबर | : | +91 9760230025 |


## मिलने का पता


1) लेखक का निवास, अफ्रीकी बिल्डिंग क़दीम अबुल मआली देवबन्द।

2) देवबन्द के सभी पुस्तकालों पर।

3) लेखक का निवास, मुहल्ला रहमतनगर क़ासिमपुर गढ़ी, ज़िला बिजनौर।

Email : toheedalamqasmi@gmail.com



**सभी अधिकार लेखक द्वारा आरक्षित है।**

# विषय

# खुशी की बात

यह पुस्तक आदरणीय जनाब मौलाना तौहीद आलम साहब क़ासमी बिजनौरी लेक्चरर दारुल उलूम देवबन्द की नई पुस्तक है। मौलाना ने इस पुस्तक में ईमान की वास्तविकता, ईमान की आवश्यकता और उसकी क़दर की पहचान कराई है।

यह बड़े दुख की बात है कि मुसलमान घरानों में जनम लेने वाले ख़ानदानी और पुश्तैनी मुसलमान को जो बुनयादी धार्मिक शिक्षा और आवश्यक धार्मिक जानकारी से महरूम रह गये हों उनमें अधिकतर यह भी नहीं जानते कि ईमान क्या चीज़ है? और किसी इन्सान के मुसलमान होने के लिए किन बातों का जानना, मानना और उनका विश्वास करना ज़रूरी है। इस पुस्तक "ईमान क्या है?" के लिखने का बुनयादी मक़सद यही है कि हर मुसलमान ईमान की वास्तविकता को जान ले। और मुसलमान होने के लिए जिन बातों को जानना और उन पर विश्वास करना आवश्यक है उनको अच्छी तरह समझ ले। जिनका ज़िक्र मुख्तसर तौर पर कलिमा ईमान-ए-मुफ़स्सल (آمَنْتُ بِاللهِ وَمَلَائِكَتِهٖ وَكُتُبِهٖ وَرُسُلِهٖ وَالْيَوْمِ الآخِرِ وَالْقَدْرِ خَيْرِهٖ وَشَرِّهٖ مِنَ اللهِ تَعَالَى وَالْبَعْثِ بَعْدَ الْمَوْتِ) में मौजूद है।

किताब की भाषा बहुत आसान और बयान का अंदाज़ सबको समझ में आने वाला और आसान है।

पुस्तक के आख़िर में अद्भुत दृश्य क़यामत और आख़िरत के चरणों का अच्छे ढंग से तफसीली, तार्किक वर्णन आख़िरत की फ़िक्र पैदा करने के लिए बेहतरीन नुस्ख़ा है। किताब की क़दर और मज़बूती में इस बात से और ज़्यादा इज़ाफ़ा हो जाता है कि इस की तरतीब बहरुल उलूम हज़रत मौलाना नेअमतुल्लाह साहब आज़मी दामत बरकातुहुम की देख रेख व सरपरस्ती में हुई है।

इससे पहले मौलाना तौहीद आलम साहब की पुस्तक “मसलक अहल-ए-सुन्नत वलजमाअत यानी उलमा-ए-देवबन्द के अक़ायद व नज़रियात” पढ़े लिखे लोगों के बीच अच्छी नज़र से देखी जा चुकी है। बंदा दुआ करता है कि अल्लाह तआला लेखक की इस मेहनत को क़बूल फ़रमाए, लोगों के लिए फ़ायदामंद बनाए और हम सबको पक्के ईमान के तक़ाज़ों के साथ ज़िंदगी बिताने और ईमान के साथ अच्छे अंत की तौफ़ीक़ अता फ़रमाए।

अबुल क़ासिम नोमानी ग़ुफ़िरा-लहू
कुलपति दारुल उलूम देवबन्द
07/05/1442 हिज्री मुताबिक़23/12/2020 ईसवी

❋ ❋ ❋ ❋ ❋

❋ ❋ ❋

❋ ❋

# प्रस्तावना

## हज़रत अक़दस मौलाना नेमतुल्लाह साहब आज़मी दामत बरकातुहुम, द्वारा

हदीस प्रोफेसर, दारुल उलूम देवबन्द

हर दौर और काल में धर्म, ईमान और इस्लाम को जानने की आवश्यकता रही है,वर्तमान में इसकी आवश्यकता और अधिक हो गई है, इसलिए इस पुस्तिका में ईमान,शिर्क और इस्लाम की संक्षिप्त व्याख्या की गई है।

### धर्म:

धर्म एक प्राकृतिक भावना है जिसका बीज इंसान की प्रवृत्ति में पाया जाता है,कुछ अपवादों के अलावा हर व्यक्ति में इस आकर्षण का प्रभाव नज़र आता है, मगर इन्सान की बुद्धि और अनुभव के अंतर से वह प्रभाव भिन्न रूपों में ज़ाहिर होता है। कुल मिलाकर धर्म, बुद्धि के मानिंद इंसान की एक विशेषता है।

### धर्म  का वर्गीकरण:

मूलरूप से धर्म  को दो भागों में बांट दिया जाता है, यद्यपि दोनों भागों में एक आंतरिक संबंध होता है, परन्तु जीवन के दो अलग-अलग क्षेत्रों से संबंधित होने के कारण दोनों के बीच अंतर भी स्पष्ट है।

(1) धर्म की एक स्थिति और एक रूप तो व्यक्ति के आंतरिक जीवन से संबंधित है, और धर्म से इन्सान प्रत्यक्ष रूप से जुड़ा हुआ होता है, इस स्तर पर धर्म इंसान की धार्मिक तृष्णा को तृप्त करता है/ प्यास बुझाता है।

(2) धर्म की दूसरी स्थिति और उसका दूसरा रूप लोगों के सामाजिक जीवन से संबंधित है, यहां पर धर्म एक परंपरा के रूप में सामने आता

है,और इस स्तर पर व्यक्ति के लिए धर्म की व्यवहारिक एवं सामाजिक अभिव्यक्ति संभव होती है,और धर्म के इन सामाजिक रूपों के माध्यम से दुनिया के विभिन्न धर्मों में आसानी से अन्तर किया जा सकता है। समाज और धर्म के इन सामूहिक रूपों और धार्मिक एवं सामाजिक परंपराओं का आधार वही आंतरिक ज्ञान एवं आध्यात्मिक अनुभव होते हैं,वहीं इसको समझने योग्य बनाते हैं।और इन्हीं अन्तर्ज्ञानों एवं आध्यात्मिक अनुभवों के परिणामस्वरूप उजागर हुई आस्थाओं और प्रतीकों ने कर्मों का रूप धारण कर लिया है। यही कारण है कि बौद्धिक तर्क पर कभी धर्म की आधारशिला न रखी जा सकी और न रखी जा सकती है। धर्म की खोज व्यक्ति के अन्दर पैदा होने के बाद उसका अस्तित्व एवं उसका प्रचार-प्रसार उन्हीं लोगों के माध्यम से होता जो आध्यात्मिक अनुभव का दावा करते हैं।

कुल मिलाकर इस समय इस्लाम धर्म जो इंसान की प्रवृत्ति के एकदम अनुरूप है उसका मूलतत्व ईमान एवं विश्वास को बहुत ही संक्षिप्त तरीक़े पर इस पुस्तिका में वर्णन किया गया है,जो उर्दू एवं हिंदी दोनों भाषाओं में छपेगा। इंशाअल्लाह इन दोनों भाषाओं को जानने वालों के लिए लाभदायक होगा। अल्लाह तआला अपने दरबार में स्वीकार करके जनता के लिए इसको लाभप्रद एवं हितकारी बनाए। आमीन सुम्मा आमीन

नेमतुल्लाह आज़मी
ह़दीस प्रोफेसर, दारुल उलूम देवबन्द

❋ ❋ ❋ ❋ ❋

❋ ❋ ❋

# संपादकीय निवेदन

इस्लाम धर्म का सर्वप्रथम मूल तत्व ईमान एवं विश्वास है,और ईमान ही अन्य सभी धार्मिक किर्या कलापों एवं इबादतों के लिए आत्मा का दर्जा रखता है कि ईमान के बग़ैर कोई भी इबादत,आराधना या कर्म स्वीकार्य नहीं हो सकता।

ईमान का मूल अर्थ विश्वास करना एवं मानना है, अतः ईमान यह है कि अल्लाह के अस्तित्व और उसकी विशेषताओं पर विश्वास किया जाए, फ़रिश्तों, आसमानी किताबों, रसूलों, परलोक, अच्छे-बुरे भाग्य एवं मरने के बाद पुनर्जीवन को सत्य और सही माना जाए,और जो बातें अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलयहि वसल्लम ने अल्लाह की ओर से बताई हैं उनको सही और सत्य माना जाए,दिल से उनकी पुष्टि की जाए। अतः पता चला कि वास्तविक मोमिन व मुसलमान बनने के लिए दो बातें आवश्यक हैं,एक यह कि हम क़ुरान व सुन्नत से इस्लाम धर्म की आवश्यक एवं बुनियादी बातों को जानें,और पता करें, दूसरे यह कि उनको सही और सत्य मानें और उनके अनुसार जीवन व्यतीत करने की कोशिश करें।

प्रस्तुत पुस्तिका "ईमान क्या है" इसी आवश्यकता का बोध एवं अहसास करते हुए उन शुभचिंतकों एवं मित्रों के लिए तैयार की गई है जो डायरेक्ट बड़ी बड़ी किताबों से ईमान की आवश्यक एवं बुनियादी बातों को नहीं जान सकते,उनके लिए बहुत सरल शैली में उन बातों को बयान कर दिया गया है।

इसी आवश्यकता का अहसास एवं प्रेरणा माननीय गुरूजी हज़रत मौलाना अल्लामा नेअमतुल्लाह साहब आज़मी हदीस प्रोफेसर विभाग दारुल उलूम देवबंद (अल्लाह उनको दीर्घायु प्रदान करे) के दिल में पैदा हुआ अतः हज़रत ने इन पंक्तियों के लेखक को आदेश दिया कि क़ुरान की आयतों की रौशनी में बहुत सरल भाषा में एक पुस्तिका तैयार करो!

लेखक ने अपना सौभाग्य समझते हुए प्रसन्नतापूर्वक आदेश का पालन किया,और अल्लाह् तआला की मेह्रबानी एवं दया का परिणाम है कि आज आप लोगों के हाथों में जो पुस्तिका है,यह पवित्र व पूजनीय ईश्वर की दया व कृपा एवं हज़रत माननीय गुरूजी के संरक्षण का परिणाम है।

अंततः माननीय पाठकों से अनुरोध है कि इन बातों को स्वयं भी सीखें और दूसरों को भी सिखाएं व बतलाएं, इसके अतिरिक्त दुनिया में इन बातों को आम करने और फैलाने की कोशिश को जीवन का उद्देश्य बनाएं। अल्लाह् तआला आपको बेह्तरीन बदला दे।

## टिप्पणी:

किसी भी धार्मिक पुस्तक का अध्ययन केवल "ज्ञान भ्रमण" के लिए कदापि नहीं करना चाहिए, विशेषकर ईमान और उससे संबंधित मामलों एवं मुद्दों का, बल्कि अल्लाह् ताला और रसूलुल्ललाह् सल्लल्लाहु अलयहि वसल्लम के साथ अपने ईमानी संबंध को ताज़ा करने उसमें बढ़ोतरी करने,उसको अपनाने,और मार्गदर्शन प्राप्त करने के इरादे से अध्ययन करना चाहिए। फिर अध्ययन के समय अल्लाह् तआला की महानता,उसकी महिमा और अल्लाह् के रसूल हज़रत मुहम्मद मुस्तफ़ा सल्लल्लाहु अलयहि वसल्लम की मुहब्बत व महानता को अवश्य ही दिल में उजागर करके पूर्णतः ध्यानमग्न होकर आदर व सम्मान के साथ अध्ययन किया जाए, तो इंशाअल्लाह् नक़द ही नूर और बरकतें नसीब होंगी।

अल्लाह् तआला इस पुस्तिका को लाभदायक बनाए,और इन पंक्तियों के लेखक को,उसके गुरूओं,संतों,महापुरुषों, माता-पिता और सभी शुभचिंतकों के लिए मुक्ति व माफ़ी का साधन बनाए।आमीन या रब्बल आलमीन।

तौहीद आलम क़ासमी
लेक्चरर, दारुल उलूम देवबन्द
1 जुमादिल ऊला 1442 हिज्री

# इस्लाम धर्म

इस्लाम उस धर्म एवं उस तरीक़े पर जीवन व्यतीत करने का नाम है जो अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलयहि वसल्लम अल्लाह तआला की ओर से लेकर आये हैं,और जो पवित्र क़ुरान और रसूलुल्ललाह सल्लल्लाहु अलयहि वसल्लम की हदीसों में बतलाया गया है,अतः जो कोई भी इस धर्म और इस तरीक़े को चुनकर इसके अनुसार जीवन व्यतीत करे,वास्तव में वही मुसलमान है। और जो लोग इस धर्म को न मानते हों और न इस पर चलते हों वे मुसलमान नहीं हैं।

### इस्लाम धर्म के दो भाग:

जैसा कि ऊपर की भूमिका से पता चला, इस्लाम के दो भाग हैं,आंतरिक एवं बाह्य।

1) इस्लाम धर्म के आंतरिक एवं आध्यात्मिक भाग को ईमान कहा जाता है। पवित्र हदीसों में इसका यह विवरण दिया गया है कि ईमान नाम है अल्लाह पर, रसूलों पर, फ़रिश्तों पर, अल्लाह की किताबों पर और परलोक पर विश्वास करने का।

2) इस्लाम धर्म के दूसरे भाग का संबंध प्रत्यक्ष एवं सार्वजनिक क्रिया-कलापों से है जिसको हदीस में इस्लाम का नाम दिया गया है।

इसका अपेक्षाकृत विस्तारपूर्वक वर्णन ईमान और शिर्क के बाद आयेगा।

# ईमान

ईमान इसको कहते हैं कि अल्लाह तआला को एक अकेला ईश्वर मानने के साथ मुहम्मद सल्लल्लाहु अलयहि वसल्लम को अल्लाह का रसूल माना जाए,और विश्वास किया जाए कि अल्लाह ने हमारे मार्गदर्शन हेतु वही(ईश्वरीय वाणी) के माध्यम से उनको बहुत सी वे बातें बतलायी हैं जो हम आंख,कान इत्यादि अपने ज्ञानस्रोतो से नहीं जान सकते,और इसी

कारण उनकी सब बातों को सत्य माना जाए जो वह अल्लाह की ओर से हमारे पास पहुंचाए,एवं उनके लाए हुए धर्म को सच्चे धर्म की हैसियत से स्वीकार किया जाए।

कुल मिलाकर! ईमान का अर्थ यह है कि उन सब बातों को सच मानकर स्वीकार किया जाए जो पैग़म्बर अल्लाह की ओर से पहुंचायें और बतलायें।

## आस्थाएं

जिन बातों पर ईमान लाने और आस्था रखने की मांग हमसे की गई है,उनमें से कुछेक का संबंध अल्लाह व्यक्तित्व एवं उसकी विशेषताओं से है,और कुछ का संबंध दूसरी चीज़ों से है, उदाहरणस्वरूप रसूलों,फ़रिश्तों, किताबों और क़यामत से। अल्लाह तआला कहता है:

﴿ءَامَنَ ٱلرَّسُولُ بِمَآ أُنزِلَ إِلَيۡهِ مِن رَّبِّهِۦ وَٱلۡمُؤۡمِنُونَۚ كُلٌّ ءَامَنَ بِٱللَّهِ وَمَلَٰٓئِكَتِهِۦ وَكُتُبِهِۦ وَرُسُلِهِۦ لَا نُفَرِّقُ بَيۡنَ أَحَدٖ مِّن رُّسُلِهِۦۚ...﴾ [البقرة: 285]

*अनुवादः "आस्था रखते हैं रसूल सल्लल्लाहु अलयहि वसल्लम उस चीज़ में जो उनके पास उनके मालिक की ओर से अवतरित हुई है,इसी प्रकार मोमिन लोग भी(आस्था रखते हैं)सभी यह आस्था रखते हैं अल्लाह में और उसके फ़रिश्तों में उसकी किताबों में और उसके पैग़म्बरों में कि हम उसके पैग़म्बरों मे से किसी में भी भेदभाव नहीं करते"।*

﴿يَٰٓأَيُّهَا ٱلَّذِينَ ءَامَنُوٓاْ ءَامِنُواْ بِٱللَّهِ وَرَسُولِهِۦ وَٱلۡكِتَٰبِ ٱلَّذِي نَزَّلَ عَلَىٰ رَسُولِهِۦ وَٱلۡكِتَٰبِ ٱلَّذِيٓ أَنزَلَ مِن قَبۡلُۚ وَمَن يَكۡفُرۡ بِٱللَّهِ وَمَلَٰٓئِكَتِهِۦ وَكُتُبِهِۦ وَرُسُلِهِۦ وَٱلۡيَوۡمِ ٱلۡأٓخِرِ فَقَدۡ ضَلَّ ضَلَٰلَۢا بَعِيدًا ١٣٦﴾ [النساء: 136]

*अनुवादः "ऐ ईमान वालों! विश्वास करो अल्लाह पर और उसके रसूल पर और उसकी किताब पर जो अल्लाह ने अपने रसूल पर उतारी है,और उस किताब*

*में जो इससे पहले उतारी थी,और जो विश्वास न रखे अल्लाह में,उसके फ़रिश्तों में, किताबों में, रसूल में एवं क़यामत  के दिन में वह बहक कर दूर जा पड़ा"*

# अल्लाह पर ईमान का वर्णन

## अल्लाह तआला का अस्तित्व:

इस सिलसिले में सबसे पहली बात यह है कि अल्लाह ताला के अस्तित्व को माना जाए अर्थात इसका विश्वास रखा जाए कि सम्पूर्ण ब्रह्माण्ड को रचने वाली और दुनिया के इस कारख़ाने को चलाने वाली एक ही पवित्र शक्ति और हस्ती है,और वह अल्लाह है।

यहां यह बात भी समझ लेनी चाहिए कि इतिहास से और दुनिया की धार्मिक किताबों से भी पता चलता है कि अल्लाह तआला के अस्तित्व में आस्था दुनिया के सभी समूहों में सदैव ही रही है, अर्थात इतनी बात हर काल में और समस्त समूहों व समुदायों में मानी जाती रही है कि इस दुनिया का कोई पैदा करने वाला है,और वह सर्वशक्तिमान है।

कुल मिलाकर! अल्लाह तआला के अस्तित्व  का मुद्दा मानवीय प्रवृत्ति के लिए संदेह और संकोच के योग्य ही नहीं है,और इसी कारण इस गुमराही ने कभी भी इंसानों में व्यापक रूप धारण नहीं किया।; बल्कि अक्सर तो ऐसा भी देखा गया है कि ज़ाहिर में ईश्वर का इंकार करने वालों को जब टटोला गया तो अंदाज़ा हुआ कि उनके दिल के किसी कोने में ईश्वर के अस्तित्व की मान्यता गुप्त रूप से पायी जाती है।

❋ ❋ ❋ ❋ ❋

# एकेश्वरवाद

एकेश्वरवाद का मामला ऐसा है कि जिसमें बहुत से समुदाय गुमराह हुए हैं,यही कारण है कि समस्त पैग़म्बरों (अलयहिमुस्सलाम)के धर्म-प्रचार एवं उपदेशों का यह विशेष विषय रहा है।

एकेश्वरवाद के लिए इतना ही पर्याप्त नहीं है कि (1) अल्लाह के अस्तित्व पर विश्वास किया जाए; बल्कि उस पर विश्वास के साथ-साथ इस पर भी विश्वास किया जाए और माना जाए कि (2) सम्पूर्ण विश्व की रचना करने वाला, अर्श से फ़र्श तक और आसमान से ज़मीन तक की सभी चीज़ों का निमार्ण भी उसी अल्लाह ने किया है,हर चीज़ को वही अस्तित्व प्रदान करता है,और हर चीज़ पर क़ब्ज़ा एवं नियंत्रण भी उसी का है।

(3) हर चीज़ का संचालन भी वह स्वयं ही करता है, अतः अल्लाह ही पालने वाला है, वही भरन-पोषण एवं जीविका का प्रबंध करता है, वही संतान देता है, वही सम्मान व अपमान देने वाला है, वही मृत्यु व जीवन प्रदान करता है, वही स्वस्थ व अस्वस्थ करता है, वही अमीर या ग़रीब बनाता है। कुल मिलाकर इस दुनिया के कारख़ाने में जो कुछ भी होता है, सब अल्लाह ही के आदेश और उसकी इच्छा अनुरूप होता है, सब उसके मोहताज हैं और वह किसी का मोहताज नहीं है।

कुल मिलाकर! अल्लाह को एक मानने के लिए इतना विश्वास पर्याप्त नहीं है कि ज़मीन व आसमान एवं सम्पूर्ण ब्रह्माण्ड की रचने वाला और बनाने वाला एक ही है,ऐसा नहीं है कि कुछ चीजें किसी ने बनाई हों और कुछ किसी ओर ने।

फिर पवित्र क़ुरान में ही जगह-जगह पर इसको स्पष्ट किया गया है कि इतनी बात तो अरब के मुश्रिक (बहुशवरवादी) भी मानते थे! परन्तु फिर भी रहे मुश्रिक ही।

## पवित्र क़ुरान का बयान कि अरब के मुश्रिक भी एक सीमा तक एकेश्वरवाद को मानते थे

शब्दों के थोड़े अंतर के साथ कई स्थान पर क़ुरान में यह बात कही गई है कि अगर इन मुश्रिकों से पूछा जाए कि बतलाओ,ज़मीन व आसमान और सम्पूर्ण ब्रह्माण्ड की उत्पत्ति करने वाला कौन है?तो वे कहेंगे और इसको स्वीकार करेंगे कि वह अल्लाह है।

﴿وَلَئِن سَأَلْتَهُم مَّنْ خَلَقَ ٱلسَّمَٰوَٰتِ وَٱلْأَرْضَ وَسَخَّرَ ٱلشَّمْسَ وَٱلْقَمَرَ لَيَقُولُنَّ ٱللَّهُ﴾
[العنكبوت: 61]

*अनुवादः "और अगर उनसे पूछें कि वह कौन है जिसने आसमान और ज़मीन को बनाया और जिसने सूर्य एवं चन्द्रमा को काम में लगा रखा है,तो वे लोग यही कहेंगे कि वह अल्लाह है"।*

बल्कि इससे आगे बढ़कर वे यह भी मानते एवं स्वीकार करते थे कि इस सारे कारख़ाने को चलाने वाला भी अल्लाह ही है,वही जीविका प्रदान करता है, वही जीवित करता एवं मृत्यु देता है। इसीलिए सूरा यूनुस में कहा गया है:

﴿قُلْ مَن يَرْزُقُكُم مِّنَ ٱلسَّمَآءِ وَٱلْأَرْضِ أَمَّن يَمْلِكُ ٱلسَّمْعَ وَٱلْأَبْصَٰرَ وَمَن يُخْرِجُ ٱلْحَىَّ مِنَ ٱلْمَيِّتِ وَيُخْرِجُ ٱلْمَيِّتَ مِنَ ٱلْحَىِّ وَمَن يُدَبِّرُ ٱلْأَمْرَ فَسَيَقُولُونَ ٱللَّهُ﴾ [يونس: 31]

*अनुवादः "ऐ पैग़म्बर! आप इन मुशरिकों से पूछिए कि बताओ कौन तुम्हारे लिए ज़मीन व आसमान से जीविका का प्रबंध करता है? कौन कानों एवं आंखों का मालिक है? किसका इन चीज़ों पर नियंत्रण हैं? कौन ज़िन्दा से मुर्दा को और मुर्दा से ज़िन्दा को निकालता है?और कौन है जो इस सम्पूर्ण सृष्टि की व्यवस्था कर रहा है?आप जब इनसे पूछंगे तो ये साफ़ कहेंगे कि यह सब करने वाला केवल एक अल्लाह है"।*

सूरा मोमिनून में शीर्षक बदलकर यह कहा गया है:

﴿قُلْ مَنۢ بِيَدِهِۦ مَلَكُوتُ كُلِّ شَىْءٍ وَهُوَ يُجِيرُ وَلَا يُجَارُ عَلَيْهِ إِن كُنتُمْ تَعْلَمُونَ۝٨٨ سَيَقُولُونَ لِلَّهِ﴾ [المؤمنون: 88-89]

*अनुवादः "यह भी कहिए कि अच्छा (बताओ) वह कौन है जिसके हाथ में सभी चीज़ों का नियंत्रण है?और वह शरण देता है,और उसके विरुद्ध कोई किसी को शरण नहीं दे सकता,अगर तुमको कुछ ज्ञान है? (तब भी जवाब में) वे यह अवश्य कहेंगे कि यह सब विशेषताएं भी अल्लाह ही की हैं"। बहरहाल इतना एकेश्वरवाद तो अरब के मुश्रिक भी मानते थे।*

## फिर उनका शिर्क क्या था?

पवित्र क़ुरान ही से पता चलता है कि वह अल्लाह ताला को सम्पूर्ण सृष्टि का रचयिता व मालिक और पूर्व नियोजक व प्रबंधक अर्थात इस पूरी व्यवस्था को चलाने वाला मानने के बावजूद यह समझते थे कि जिन हस्तियों को ये देवी-देवता मानते हैं वे यद्दपि उसी अल्लाह की पैदा की हुई सृष्टि का हिस्सा हैं किन्तु उनका अल्लाह से ऐसा विशेष संबंध है कि अगर वे किसी को कुछ देना चाहें तो दे सकते हैं, किसी से कुछ छीनना चाहें तो छीन सकते हैं,और उसे ग़रीब व निर्धन बना सकते हैं, इसी प्रकार अगर किसी रोगी को स्वस्थ करना चाहें तो कर सकते हैं,किसी को संतान देना चाहें तो दे सकते हैं।

कुल मिलाकर! ये मुश्रिक यह समझते थे कि अल्लाह तआला ने विशेष संबंध के आधार पर हमारे इन देवताओं को आंशिक रूप से कार्यों के अधिकार दे रखे हैं, लाभ-हानि की कुछ शक्ति स्थायी एवं निजी रूप से इस प्रकार इनके अधीन कर दी है कि उसका अपने भक्त एवं विरोधी को लाभ-हानि पहुंचाना हर बार अल्लाह की इच्छानुमति पर निर्भर नहीं है! लेकिन अगर रोकना चाहे तो हावी अल्लाह ही की शक्ति रहे,जैसे राजा-महाराजा अपने प्रतिनिधि शासकों को विशेषाधिकार इस प्रकार दे देते हैं कि उनका लागू करना उस समय महारजाधिराज की अनुमति पर निर्भर

नहीं होता; परन्तु अगर वह रोकना चाहे तो महाराजा का आदेश ही सर्वोपरि होगा।

इसी प्रकार ये लोग झूठे देवताओं को सच्चे ईश्वर अथवा अल्लाह तआला का घनिष्ठ और विशेष समझते हुए यह आस्था एवं विश्वास रखते थे कि हमारे देवी-देवता अल्लाह के दरबार में हमारी सिफ़ारिश करेंगे जिसके नतीजे में हमें जहन्नम अथवा नर्क से सुरक्षा और जन्नत अथवा स्वर्ग में प्रवेश मिल जाएगा,इसी विचार व आस्था को खारिज करते हुए अल्लाह तआला कहता है:

﴿وَيَعْبُدُونَ مِنْ دُونِ اللَّهِ مَا لَا يَضُرُّهُمْ وَلَا يَنْفَعُهُمْ وَيَقُولُونَ هَؤُلَاءِ شُفَعَاؤُنَا عِنْدَ اللَّهِ﴾
[يونس: 18]

*अनुवाद: "वो लोग अल्लाह के सिवा ऐसी चीज़ों को पूजते थे जो ना उनको तकलीफ पहुंचा सकते हैं ना फायादा, और यूं कहते हैं कि अल्लाह के यहाँ यही हमारी सिफ़ारिश करेंगे"।*

सिफ़ारिश का अवसर अवश्य मिलेगा, लेकिन जिसे अल्लाह चाहेंगे उसे यह अवसर प्रदान करेंगे; फिर जिनको सिफ़ारिश का अवसर प्राप्त होगा। वे भी हर किसी की सिफ़ारिश न कर सकेंगे; बल्कि उन्हीं लोगों की सिफ़ारिश करेंगे जिनकी सिफ़ारिश में अल्लाह की इच्छा होगी और उसकी ओर से अनुमति होगी। जबकि मुश्रिक व इंकार करने वालों के लिए अल्लाह की ओर से बिल्कुल भी अनुमति नहीं होगी।अतः कोई भी उनकी सिफ़ारिश करने की हिम्मत नहीं कर सकेगा। ईश्वरीय वाणी है:

﴿... لَّا يَتَكَلَّمُونَ إِلَّا مَنْ أَذِنَ لَهُ ٱلرَّحْمَـٰنُ وَقَالَ صَوَابًا۝٣٨﴾ [النبأ: 38]

*अनुवाद: "कोई बोल न सकेगा मगर वह जिसको रहमान बोलने की अनुमति दे दें,और वह व्यक्ति बात भी ठीक कहे"।*

सूरा बक़रह में है:

﴿... مَن ذَا ٱلَّذِى يَشْفَعُ عِندَهُۥٓ إِلَّا بِإِذْنِهِۦ...۝٢٥٥﴾ [البقرة: 255]

*अनुवाद:"ऐसा कौन व्यक्ति हैं जो उसके पास किसी की सिफ़ारिश कर सके बग़ैर उसकी अनुमति के"।*

कुल मिला कर बात यह है कि ये लोग इस आधार पर उन्हें प्रसन्न और ख़ुश रखने के लिए उनकी आराधना करते थे,नज़रे और मन्नतें मानते थे,चढ़ावे चढ़ाते थे,उनकी मूर्तियों की परिक्रमा करते थे,अपनी आवश्यकताओं में उनसे सहायता मांगते थे,तो पवित्र क़ुरान ने उनके इसी विचार एवं तौर-तरीक़े को शिर्क अथवा बहुश्वरवाद क़रार दिया है और अधिकतर समुदायों और देशो के मुशरिको मे यही शिर्क रहा है,ऐसे मुश्रिक दुनिया में प्रायः बहुत कम हुए हैं जिनकी आस्था यह हो कि इस दुनिया की रचना करने और इसे चलाने में अल्लाह का कोई सहायक एवं साझीदार है।

## अरब के मुश्रिकों के शिर्क की वास्तविकता और क़ुरान में उसका रद्द

बहरहाल,अरब के मुशरिको का शिर्क यह नहीं था कि वे अपनी देवी देवताओं को अल्लाह की तरह दुनिया का रचियता या जीविका प्रदान करने वाला समझते हों या किसी हैसियत या विशेषता में उन्हें अल्लाह के समान समझते हों,या कहते हों;बल्कि उनका शिर्क यह था कि वह अल्लाह को सम्पूर्ण ब्रह्माण्ड का निर्माता व मालिक और संचालक एवं प्रबन्धक,मानने के बावजूद यह समझते थे कि अल्लाह तआला के संबंध व निकटता की वजह से हमारे इन देवताओं को भी अल्लाह की तरफ से आंशिक रूप से कुछ अधिकार मिले हुए हैं और ये चाहें तो बनाव-बिगाड़ कर सकते हैं और इसी आधार पर ये उनको प्रसन्न करने के लिए उनकी आराधना व पूजा करते थे,अर्थात दंडवत होकर सजदा एवं परिक्रमा जैसे कार्य करते थे,नज़रे व मन्नतें मानते थे,चढावे चढाते थे,और उन से आवश्यकताएं और मुरादें मांगते थे,बस उन का यही विचार और यही कर्म शिर्क था और अधिकतर मुश्रिक समुदायों में इसी प्रकार का शिर्क रहा है।

## ये मुश्रिक अल्लाह को सब का निर्माता व मालिक मानने के बावजूद दूसरों से अपनी आवश्यकताएं क्यों मांगते थे?

बहुत से लोगों के दिलों में यह सवाल उठता होगा और उठना चाहिए कि ये मुश्रिक जब यह जानते एवं मानते थे कि सारी दुनिया का असल निर्माता व मालिक अल्लाह ही है और जिन चीजों को वे अपना देवी-देवता अथवा ज़रूरत पूरी करने वाला व कठिनाइयां दूर करने वाला समझते हैं वे भी उसी के द्वारा निर्मित उसके दास हैं, और अगर उनको कुछ अधिकार भी है तो वह आंशिक तौर पर ही है,पूरा-पूरा अधिकार केवल अल्लाह के हाथ में है, और खुदा मौजूद है, और उससे माँगा भी जा सकता है तो फिर ईश्वर के होते हुए इन देवी देवताओं से अपनी इच्छाऐ क्यों मांगते थे? और ईश्वर की बजाय उनकी आराधना व पूजा क्यों करते थे?

इसका एक जवाब अल्लाह तआला ने स्वयं पूजा-अर्चना करने वालो की ज़ुबानी नक़ल किया है:

﴿إِذْ قَالَ لِأَبِيهِ وَقَوْمِهِۦ مَا تَعْبُدُونَ ۝٧٠ قَالُوا۟ نَعْبُدُ أَصْنَامًا فَنَظَلُّ لَهَا عَـٰكِفِينَ ۝٧١ قَالَ هَلْ يَسْمَعُونَكُمْ إِذْ تَدْعُونَ ۝٧٢ أَوْ يَنفَعُونَكُمْ أَوْ يَضُرُّونَ ۝٧٣ قَالُوا۟ بَلْ وَجَدْنَآ ءَابَآءَنَا كَذَٰلِكَ يَفْعَلُونَ ۝٧٤﴾ [الشعراء: 70-74]

*अनुवादः "जब हज़रत इब्राहिम अलयहिस्सलाम ने कहा अपने बाप और उनके समुदाय से कि: तुम किस को पूजते हो?वे बोले हम पूजते हैं मूर्तियों को,फिर सारे दिन उन्हीं के पास लगे रहते हैं। फिर कहा जब पुकारते हो तो वे कुछ सुनते हैं,या कुछ तुम्हारा भला या बुरा करते हैं? बोले नहीं,पर हमने अपने बाप दादाओं को यही काम करते पाया।*

और दूसरे स्कालर्स ने अपने अपने तौर पर और भी जवाब दिए हैं। उदाहरणत:कुछ लोग इस नतीजे पर पहुंचें हैं कि ये सब मुश्रिक यह

समझते थे,और समझते हैं कि अल्लाह को प्रसन्न व ख़ुश करना और फिर उस से अपने काम करा लेना तो बहुत कठिन है,क्योंकि अल्लाह तो उस समय प्रसन्न होगा जब उसके बतलाए हुए तमाम धार्मिक आदेशों का पालन किया जाए,झूट न बोला जाए,बेईमानी न की जाए,किसी को धोखा न दिया जाए,किसी का हक़ न मारा जाए,सभी अवैध और अपवित्र कामों से बचा जाए और पवित्र जीवन व्यतीत किया जाए।और यह उन मुश्रिकों के लिए बहुत कठिन था। यह तो सारे जीवन संघर्ष करना हुआ,इसलिए वह ईश्वर को प्रसन्न करके उससे अपने काम कराने से तो मायूस हो गए और इस के सिवा उन्होंने जिन झूठी सच्ची वास्तविक या काल्पनिक हस्तियों को आवश्यकताएं पूरी करने वाले,और लाभ-हानि का कर्ता-धर्ता समझ रखा है,उनके बारे में इनका विचार है कि उनको केवल रूपये दो,रुपयों के बताशो से प्रसन्न करके या दो चार रुपयों के फूल-माला चढ़ा कर और एक दीपक जला कर सारे काम कराए जा सकते हैं।

## एक महत्वपूर्ण प्रश्न:

एक और महत्वपूर्ण प्रश्न उठता है कि इस साधनपूर्वक दुनिया में हम बहुत सी चीजों से फ़ायदा उठाते हैं और काम लेते हैं, जैसे पानी से प्यास बुझाते हैं,आग और सूर्य से रौशनी व गर्मी प्राप्त करते हैं इसी तरह अपने जैसे बहुत से लोगों से हम बहुत से अवसरों पर सहायता लेते हैं।उदाहरणः हम हकीमों/वैद्दों और डॉक्टरो से इलाज में सहायता लेते हैं,मुकदमों में वकीलों से सहायता लेते हैं,इसी प्रकार बहुत से कामों में नौकरों व मज़दूरों की सहायता लेते हैं,इसी तरह बहुत से ग़रीब और निर्धन अमीरों से मदद व सहायता के इच्छुक होते हैं तो इस की क्या हैसियत है और यह शिर्क क्यो नहीं है?

* * * * *

## दुनिया के माध्यमों एवं साधनों से सहायता लेना शिर्क क्यों नहीं है?

वास्तविकता यह है कि अल्लाह तआला ने इस साधनपूर्वक दुनिया में जो विशेषताएं और जो प्रभाव रख दिए हैं, जैसे पानी में प्यास बुझाने का असर,आग और सूर्य में गर्मी व रौशनी पहुंचाने का असर,दवा में रोग को दूर करने का असर इत्यादि तो सब जानते हैं, कि इन प्रभावों व विशेषताओं में स्वयं इन चीजों का कोई नियंत्रण नहीं है; बल्कि अल्लाह ने इनको हमारे अधीन कर दिया है, इसलिए इनसे काम लेने में शिर्क का कोई सवाल ही नहीं उठता,इन चीजों की हैसियत तो हमारे सेवकों की सी है और इनसे काम लेना ऐसा है जैसा की हम अपने जानवरों,घोडों एवं गधों से काम लेते हैं।

इसी तरह जिन बंदों को अल्लाह ने कोई ऐसी प्रतिभा व योग्यता दे दी है जिससे वे दूसरों को कोई लाभ या सहायता पहुँचा सकते है, जैसे हकीम,डॉक्टर,वकील,आदि तो इनके बारे में हर एक यह समझता हैं कि इन मे कोई अदृश्य शक्ति नहीं है और इनके क़ब्ज़े मैं कुछ भी नहीं है और यह भी हमारी ही तरह अल्लाह के असहाय बन्दे हैं,बस इतनी बात है कि अल्लाह ने उन्हें इस साधनपूर्वक दुनिया में इस लायक़ बना दिया है कि हम उनसे उक्त कामों में मदद ले सकते हैं,इस आधार पर इनसे काम लेने और सहायता प्राप्त करने में शिर्क का कोई सवाल ही पैदा नहीं होता,शिर्क तो तब होता जब किसी व्यक्ति को अल्लाह के बनाये हुए इस ज़ाहिरी माध्यमों एवं साधनों के सिलसिले के बग़ैर अदृश्य रूप से अपने इरादे एवं नियंत्रण के साथ कारक एवं संचालक समझा जाए,और इस आस्था के आधार पर अपनी आवश्यकताओं में उससे सहायता मांगी जाए,और उसे प्रसन्न करने के लिए उसकी आराधना व पूजा की जाए।

## मुश्रिक अपने देवी देवताओं में यही असर मानते थे:

मुश्रिक अपने देवी देवताओं और झूठे भगवानों के बारे में यह आस्था रखते थे कि वे उनकी इच्छा एवं नियंत्रण से लाभ-हानि पहुँचा सकते हैं,अपने इसी विचार और आस्था के आधार पर "आद समुदाय" ने हज़रत

हूद अलयहिस्सलाम को अपने देवताओं से डराया था कि वे उन्हें हानि और तकलीफ़ पहुंचा सकते हैं।

पवित्र क़ुरान ने इस कथा का वर्णन करते हुए कहा है :

﴿قَالُوا يَا هُودُ مَا جِئْتَنَا بِبَيِّنَةٍ وَمَا نَحْنُ بِتَارِكِي آلِهَتِنَا عَنْ قَوْلِكَ وَمَا نَحْنُ لَكَ بِمُؤْمِنِينَ۝٥٣ إِنْ نَقُولُ إِلَّا اعْتَرَاكَ بَعْضُ آلِهَتِنَا بِسُوءٍ قَالَ إِنِّي أُشْهِدُ اللَّهَ وَاشْهَدُوا أَنِّي بَرِيءٌ مِمَّا تُشْرِكُونَ۝٥٤ مِنْ دُونِهِ فَكِيدُونِي جَمِيعًا ثُمَّ لَا تُنْظِرُونِ۝٥٥﴾ [هود: 53-55]

*अनुवादः "उन लोगों ने जवाब दिया कि ऐ हूद! आपने हमारे सामने कोई सबूत तो प्रस्तुत नहीं किया,और हम (केवल)आपके कहने से तो अपने देवताओं को छोड़ने वाले नहीं।और हम इसी तरह आपका विश्वास करने वाले नहीं। हमारा कहना तो यह है कि हमारे देवताओं में से किसी ने आपको किसी कठिनाई में डाल दिया है (हूद ने) फ़रमाया कि मैं खुल्लमखुल्ला अल्लाह को गवाह बनाता हूँ और तुम भी सुन लो और गवाह रहो कि मैं उन चीजों के बारे में उदासीन हूं जिनको तुम ईश्वर के सिवा साझी बनाते हो,बस तुम सब मिल कर मेरे साथ दांव-पेंच कर लो और फिर मुझको लेशमात्र मोहलत न दो"।*

कुल मिलाकर! जब अल्लाह तआला की हस्ती के लिए यह तीन बातें सर्वमान्य, निर्धारित एवं स्पष्ट हैं (1) अल्लाह का अस्तित्व है और वह अपने अस्तित्व में किसी का मोहताज नहीं है। (2) सम्पूर्ण सृष्टि अर्थात अर्श से फर्श तक,आसमान से ज़मीन तक की सभी चीजों की रचना करने वाला वही अकेला है। (3) इस दुनिया का संचालन एवं प्रबंधक व मुंतज़िम भी वही अकेला है। तो (4) लाभ-हानि पहुंचाने और इस लाभ-हानि के अधिकार एवं नियंत्रण में भी वह अकेला ही है,इसी को "सहायता चाहने में एकेश्वरवाद" कहा जाता है। और जब अपनी समस्त आवशयकताओं एवं ज़रूरतों में उसी से सहायता मांगी जाए और उसी को आवशयाकताएं पूर्ण करने वाला समझा जाए तो उसका आभार जताने हेतु आराधना व पूजा भी उसी अकेले की होनी चाहिए,इसी को इबादत व पूजा में ऐकश्वरवादी होना कहते हैं।

## इबादत किसे कहते हैं:

किसी के व्यक्तित्व और हस्ती को परालौकिक रूप से लाभ-हानि का मालिक और आवश्यकता-पूरक मानकर उसे प्रसन्न एवं संतुष्ट करने के लिए उसकी नज़दीकी प्राप्त करने हेतु जो आराधना, पूजा-अर्चना और अन्य कर्म जो अत्यन्त आदरपूर्वक किये जाते हैं: जैसे शीश झुकाना,परिक्रमा करना,उसके नाम की मन्नत मानना, बलि देना, और उसी का नाम जपना आदि, तो ऐसे कर्मों को धर्म की विशेष परिभाषा में "इबादत" कहते हैं,और यह केवल अल्लाह का हक़ है,जो किसी अन्य के साथ ऐसा व्यवहार करे वह निस्संदेह मुश्रिक है, ऊपर विस्तार से आ चुका है कि अधिकांश समुदायों का शिर्क इसी प्रकार का रहा है कि उन्होंने अल्लाह के सिवा भी कुछ दूसरी हस्तियों को लाभ-हानि का नियंत्रक समझकर उनको प्रसन्न करने के लिए इबादत की तरह के काम उनके लिए किये।और शिर्क ऐसा पाप एवं बड़ा ज़ुल्म है जिसकी किसी भी अवस्था में कभी क्षमा योग्य नहीं है।

## टिप्पणी:

यह ईमान एवं आस्थाएं ही इस्लाम धर्म का आंतरिक एवं आध्यात्मिक भाग हैं,इस्लाम का दूसरा वह भाग जिसे बाहरी हिस्सा,या धर्म का रुप एवं ढांचा कहा जाता है,उसकी पवित्र हदीसों में इस्लाम से व्याख्या की गई है।

❋ ❋ ❋ ❋ ❋

❋ ❋ ❋

# इस्लाम के आधारिक तत्व

इस्लाम के वह पांच आधार एवं बुनियादी शिक्षाएं जिनको उसके आधारिक तत्व कहा जाता है वे हैं :कलमा, नमाज़, ज़कात, रोज़ा एवं हज।

रसूलुल्ललाह सल्लल्लाहु अलयहि वसल्लम की मशहूर हदीस है,आप सल्लल्लाहु अलयहि वसल्लम ने फ़रमाया कि: इस्लाम पांच चीज़ों पर आधारित है,एक"ला इलाहा इल्लल्लाह मुहम्मद रसूलुल्ललाह" की गवाही देना कहना।(अर्थात यह कहना कि अल्लाह के अलावा कोई इबादत के लायक नहीं है,और मुहम्मद अल्लाह के रसूल हैं) दूसरे नमाज़ को स्थापित करना,तीसरा ज़कात देना,चौथा पवित्र रमज़ान के महीने में रोज़े रखना,पांचवां जो मक्का में अल्लाह के घर पहुंच सकते हों उनके लिए अल्लाह के घर का हज करना। और क़ुरान व सुन्नत से प्रमाणित सभी इबादतें,लेन-देन और नैतिक एवं सामाजिक मामले।

यही इस्लाम का बाहरी हिस्सा और रूप है जिसको इस्लाम का ढांचा अथवा इस्लाम का साकार एवं सजीव रूप कह सकते हैं,और इसी का संबंध व्यक्ति के सामूहिकएवं व्यवहारिक जीवन से है।

* * * * *

* * *

# हिन्दू धर्म

हिंदुस्तान में धार्मिक और सांस्कृतिक इतिहास की शुरुआत वैदिक काल और आर्यों के आने से बयान की जाती है,वैदिक काल और उसके बाद के काल के अध्ययन से ईश्वर व प्राकृतिक रूपों की उपासना से संबंधित विभिन्न व विपरीत कल्पनाएं और नमूने सामने आते हैं; अपितु इस बात पर सभी इतिहासकार सहमत हैं कि वैदिक आर्य प्रकृति पूजक थे,इसलिए प्राकृतिक रूपों की पूजा व उपासना उनके धर्म में पाई जाती है वैदिक धर्म में चांद,सूरज,सितारे, हवा,पहाड़, दरिया,पृथ्वी,आसमान और नदिँया आदि प्राकृतिक रुपों की पूजा की जाती थी,उन्हीं से संबंधित वैदिक धर्म में भजन और गीत पाए जाते हैं,इस युग में कोई मूर्ति,कोई प्रतिमा या कोई मंदिर नहीं था और न ही तीर्थयात्रा थी;परंतु भेटं चढ़ाने,और मन्नतें मानने का बड़ा रिवाज था,वास्तविक मुक्ति इसी पर आधारित समझी जाती थी,इसका विरोध लोगों में बढ़ने लगा जो इस धर्म के पतन का कारण बना। स्वयं श्री कृष्ण कहते हैं: वैदिक कर्मो से कुछ दिनों के लिए स्वर्ग मिलता है फ़िर वहां से खदेड़ दिया जाता है; लेकिन योग से विष्णु के साथ मिलन पूर्ण हो जाता है,फिर कभी जुदाई नहीं होती,बार बार जन्म लेना नहीं पड़ता। वेदों में आस्था रखने वालो को बार- बार जन्म लेना और मरना पड़ता है जबकि योग वाला अनन्त मोक्ष आसानी से प्राप्त कर लेता है।

## वैदिक मत का पतन:

वैदिक धर्म से लोगों की नफ़रत,और कठोर तपस्या एवं योग से मुक्ति प्राप्त करने के लिए लोग दूसरे धर्म और मज़हब की खोज में थे। अतः बौद्ध मत और जैन को लोकप्रियता मिलती गई,फिर उस जैन और बौद्ध धर्म को अशोक जैसा राजा मिल गया,उसने इस धर्म के प्रचार-प्रसार के लिए

बहुत प्रयास किए जिस के कारण हिन्दुस्तान से बाहर विदेशो में भी इस धर्म की उन्नति हुई।

इसके अतिरिक्त पेशावर में एक राजा हुआ जिसने इस धर्म के प्रचार-प्रसार में बढ़ चढ़ कर भाग लिया और अफ़ग़ानिस्तान, समरक़ंद,बुख़ारा और इससे भी आगे तक बौद्ध धर्म और जैन धर्म को लोकप्रियता मिली।हिंदुस्तान में जब मुसलमानों आये, चाहे मोहम्मद बिन कासिम के दौर में या महमूद ग़ज़नवी के दौर में,दोनों ही के काल में हिंदुस्तान के अन्दर जैन व बौद्ध धर्म छाए रहे,इसी लिए दोनों विजेताओं की लडाई और युद्ध भी बौद्ध धर्म और जैन धर्म के मानने वालों से ही हुआ।

## टिप्पणी:

जैन धर्म व बौद्ध धर्म में बलि देने और मन्नत मांगने को एक बेकार चीज़ माना गया,और असल मुक्ति अच्छे और भले कर्मों में मानी गई है। इसके अलावा मुक्ति का द्वार हर वर्ग के लिए खोल दिया गया,ब्राह्मण हो या क्षत्रिय,वैश्य हो अथवा शूद्र, पुरुष हो या स्त्री सब मोक्ष प्राप्त कर सकते हैं।

## बौद्ध धर्म का पतन:

परंतु हिंदू धर्म बौद्ध धर्म के विरुद्ध उठ खड़ा हुआ और देखते ही देखते बौद्ध धर्म का बिल्कुल ही पतन हो गया, बौद्ध धर्म में बनाईं गयीं सभी मूर्तियों,प्रतिमाओं और मंदिरों के स्थान पर हिंदुओं ने अपने पूजास्थल एवं मूर्तियां बना लीं और जो तीर्थयात्राएं बौद्ध मत में थी उनको अपना लिया।

* * * * *

* * *

# नया हिंदू धर्म सनातन धर्म के रूप में

## देवी देवताओं की उत्पत्ति:

ब्राह्मणवाद अथवा वैदिक धर्म को मानने वाले अपने धर्म के विकास और दूसरों पर प्रभुत्व स्थापित करने के लिए वैदिक धर्म को एक आम सामाजिक रूप देने पर विवश हो गए, अतः इस नए धार्मिक आंदोलन ने हर स्थान के देवी-देवताओं को एक ही लड़ी में पिरो दिया और सभी देवी-देवता विष्णु के अवतार माने जाने लगे, इससे पहले आमतौर से शिव और विष्णु की पूजा होती थी,अब उन्हीं के हज़ारों रूप बन गए। नदी,नालों वृक्ष और पहाड़ों की पूजा और स्थानीय मेलों और त्यौहारों को ब्राह्मण ने ही मान्यता दी।

## नए धार्मिक आंदोलन सनातन धर्म की विशेषताएं:

(1) अब इस धर्म की सबसे महत्वपूर्ण विशेषता यह हो गई कि एक देवता का पुजारी दूसरे संप्रदाय के देवता का इंकार नहीं करता है, बल्कि उसको अपने ही देवता का एक रूप समझता है, शिव के मानने वाले विष्णु और उसके विभिन्न अवतारों को शिव ही की विभिन्न विशेषताओं का स्वरूप समझने लगे, इसी प्रकार विष्णु को मानने वाले शिव के विभिन्न स्वरूपों को विष्णु ही की शक्तियों का जलवा कहने लगे।

## त्रिमूर्ति:

अब इस नए धार्मिक आंदोलन अर्थात सनातन धर्म में समस्त देवी-देवताओं को त्रिमूर्ति (ब्रह्मा विष्णु और शिव) में समेट दिया गया,अन्य देवी-देवता इन्हीं तीनों की विशेषताएं या इनके विभिन्न स्वरूप माने गए:

**ब्रह्मा:** इसे दुनिया को रचने वाला और सृष्टि व ब्रह्माण्ड का बिल्कुल प्रारंभिक बिंदु माना जाता है।

**विष्णु:** यह सृष्टि की सुरक्षा व अस्तित्व का ज़िम्मेदार देवता माना जाता है।

**शिव:** यह ब्रह्माण्ड को नष्ट कर देने वाला देवता माना जाता है।

(2) एक बड़ी सुविधा यह दी गई कि दूसरी नस्ल के कुछ शिक्षित ख़ानदानों को ब्राह्मण मान लिया गयाऔर बहुत से लोगों की वंशावली क्षत्रियों से मिला दी गई।

परंतु हिंदू सनातन धर्म ने वर्ण व्यवस्था में कोई ढील नहीं बरती; बल्कि पहले की तरह बहुत ज्यादा सख़्ती से उस पर जमा रहा, अतः विभिन्न जातियों के लोगों को अपने अपने क़ानून एवं रिवाज का पाबंद बना दिया गया,और इसी को धार्मिक आस्था बनाकर सत्यापन की मुहर लगा दी गई।

(3) हिंदू सनातन धर्म में एक गुंजाइश यह पैदा की गई कि एक ईश्वर को मानना या हज़ारों देवी देवताओं को मानना, इसी प्रकार ईश्वर को सिरे से ना मानना हिंदू होने के लिए कोई रुकावट नहीं रही।सभी के लिए हिंदू समाज में प्रवेश करने की अनुमति है, गुंजाइश है, इस शर्त के साथ कि वह हिंदू संस्कृति हिंदूवादी जीवन के तौर-तरीकों पर चलता रहे।

पूर्व भारतीय राष्ट्रपति डॉक्टर सर्वपल्ली राधा कृष्णन (13 -मई 1962 -०3 मई -1967) अपनी किताब "भारतीय दर्शन" में लिखते हैं: "ईश्वर को मानते हों या न मानते हों,सब अपने आप को हिंदू कह सकते हैं,शर्त यह है कि वे हिंदुओं की संस्कृति व जीवन के तौर-तरीकों पर चलते हो"।

## वर्ण व्यवस्था:

सनातन धर्म ने प्राचीन वैदिक धर्म के वर्ण व्यवस्था के दृष्टिकोण को बहुत मज़बूती से थाम रखा है,इसका सार यह है कि ब्रह्मा के मुंह और सिर से ब्राह्मण,भुजा से क्षत्रिय,पेट से वैश्य (बनिया) और पैर से शूद्रों ने जन्म लिया। ब्राह्मण क्षत्रिय और वैश्य तीनों,श्रेणी के अंतर के साथ इंसान है; मगर शूद्र जो ब्राह्मण के पैर से जन्मित है वह वास्तव में इंसान ही नहीं है,बल्कि जानवरों में से एक जानवर है,उसको इंसानी रूप हमारी सेवा के लिए दिया गया है; ताकि हम लोग उनसे सेवा करवा सके और सेवा

कराने में सुविधा रहे,इसीलिए शूर्दो के जीवन का उद्देश्य यही है कि वे अपने अलावा तीनों जातियों की सेवाएं करें और इसमें उनको कुछ कहने का भी हक व अधिकार नहीं है अगर शुद्र के पास कुछ माल व दौलत और रुपया- पैसा जमा हो जाए तो वह फ़ौरन ब्राह्मण के हवाले कर दे ;क्योंकि उसमें मालिक बनने की भी क्षमता नहीं है।

शासन करने का अधिकार भी केवल ब्राह्मण को है,क्योंकि उसने ब्रह्मा के सिर से जन्म लिया है। इसी तरह क्षेत्रिय ने भी सिर से न सही मगर उस से कमतर अंग भुजा से जन्म लिया है,अतः वह भी इंसान है और उसे भी शासन करने का अधिकार प्राप्त है।इसीलिए राजा महाराजा क्षत्रियों में से होते चले आए हैं। सिर से जन्मित ब्राह्मण को अगर क्षत्रिय से कोई दुख तकलीफ़ हो तो परशुराम अवतार को जन्म दिया जाता है जो ब्राह्मण का बदला और प्रतिशोध लेता है,और उस क्षत्रिय को क़त्ल कर देता है। इसी तरह अगर क्षत्रिय को नीची जाति वाले से दुःख या तकलीफ़ पहुंचे तो उसका बदला और प्रतिशोध लेने के लिए अवतार जन्म लेता है।

## मेले और त्यौहार:

हमारे देश हिंदुस्तान के विभिन्न शहरों और स्थानों में लगने वाले मेले या मनाए जाने वाले त्योंहार और आयोजनों के सिलसिले में दो टूक बात यह है कि त्योंहार तो धार्मिक ही होते हैं। हां मेले दो प्रकार के होते हैं (1)सांस्कृतिक (2) धार्मिक

**सांस्कृतिक:** उन मेलों को कहा जाता है जो जीवन यापन की आवश्यकताओं से संबंधित वस्तुओं को बेचने व खरीदने के लिए लगाए जाते हैं। जैसे (मेरठ मे लगने वाला) नौचंदी का मेला, एवं विभिन्न शहरों में लगने वाले नुमाइश मेले। ये किसी देवी-देवता के उपलक्ष्य में नहीं होते और न ही पूजा-अर्चना इन का हिस्सा होता है,यद्यपि दूसरी बहुत सी अनैतिकताएं इनमे में भी दाख़िल हो गयी हैं; लेकिन वे कोई धार्मिक आयोजन नहीं है इसीलिए इन अनैतिकताओं के हिसाब से इनका मामला होगा और यह शिर्क ना होगा।

**धार्मिक मेले:** उन मेलों को कहा जाता है जो किसी देवी या देवता से संबंधित होते हैं,जैसे राम नवमी का मेला,देवबंद में लगने वाला देवी कुण्ड का मेला,महाराष्ट्र में लगने वाले गणपति के मेले,दशहरा का मेला आदि यह सब देवी देवताओं से संबंधित मेले हैं और पूजा-अर्चना इन मेलों का अहम भाग है।

**सारांश यह है कि हिन्दूधर्म में भी दो भाग हैं।** (1) वह भाग जो आत्मा की हैसियत रखता है और वह यह है कि देवी देवताओं के बारे में यह आस्था रखे कि उक्त चीज़ का पैदा करने वाला वह देवता है वह उक्त काम बनाने वाला है और वह लाभ-हानि पहुंचाने वाला है।

(2) वह कार्य जो पूजा, आराधना एवं मांगने के व्यवहारिक रूप है जैसे उपासना करना या इन जैसा कार्य उदाहरणस्वरूप परिक्रमा करना, बलि देना, उनके नाम की मन्नतें मांगना पकवान पकाकर चढ़ाना, शिव यात्रा पर जाना और उस पर चढ़ावा चढ़ाना, कावड़ यात्रा पर जाना और कावड़ लाकर जलाभिषेक करना आदि।

कुल मिलाकर! जो भी पूजा उपासना करने या मांगने के व्यवहारिक रूप है वही सब इस धर्म की पहचान,इसका चेहरा और इसका प्रतीक हैं इन्हीं से यह धर्म पहचाना जाता है, और इन्हीं के कारण वह दूसरे धर्मों से भिन्न होता है।

## सारांश

ऊपर ईमान अर्थात अक़ायद और इस्लाम अर्थात इबादात को बयान किया गया है। उसके बाद हिंदू धर्म का ख़ुलासा बयान कर दिया गया है कि देवी देवताओं के बारे में उनका अक़ीदा (विश्वास) क्या होता है, इसी तरह हिंदू धर्म में इबादात का दर्जा रखने वाले काम भी ज़िक्र कर दिए गए हैं।

इसी लिए हर साहिबे ईमान (मुसलमान) पर ज़रूरी और अनिवार्य है कि वह अपने स्वयं के और अपने बच्चों के ईमान की हिफ़ाज़त व सुरक्षा करे, क्योंकि अल्लाह तआला इरशाद फ़रमाते हैं -

﴿يَـٰٓأَيُّهَا ٱلَّذِينَ ءَامَنُواْ قُوٓاْ أَنفُسَكُمۡ وَأَهۡلِيكُمۡ نَارٗا ...﴾ [التحريم: 6]

*ऐ ईमान वालो! अपने आपको और अपने अहल व अयाल को जहन्नम से बचाओ।*

इस लिए ईमानी अक़ायद और इस्लामी इबादात और पहचान को अपनी और अपने परिवार वालों की ज़िंदगी का अनिवार्य हिस्सा बनाया जाए; ताकि कुफ़्र व शिर्क के दूषण व गंदगी से हिफ़ाज़त रहे, इस लिए कि कुफ़्र व शिर्क ऐसा बदतरीन गुनाह व पाप है जिसकी अल्लाह तआला के यहां कभी माफ़ी नहीं है। जैसा कि दूसरे गुनाहों को अल्लाह तआला माफ़ फ़र्मा सकते हैं। क़ुरआन करीम में है -

﴿إِنَّ ٱللَّهَ لَا يَغۡفِرُ أَن يُشۡرَكَ بِهِۦ وَيَغۡفِرُ مَا دُونَ ذَٰلِكَ لِمَن يَشَآءُۚ ...﴾ [النساء: 116]

*बेशक अल्लाह तआला शिर्क को कभी माफ़ नहीं करेंगे और इस के इलावा दूसरे गुनाहों को जिसके लिए चाहेंगे माफ़ फ़रमा देंगे।*

उपर्युक्त बयान से सरलता के ताथ मालूम हो जाएगा कि कौन से कार्य व उमूर कुफ़्र व शिर्क हैं। लेकिन फिर भी अवाम की सुबिधा के लिए तीन बातें ज़िक्र की जा रही हैं; ताकि सभी मुसलमान स्वयं भी और अपनी आने वाली नस्ल को भी इस अज़ीम गुनाह (कुफ़्र व शिर्क) से बचा सकें।

(1) देवी देवताओं के बारे में ऐसा एतेक़ाद (विश्वास) रखना जैसा कि हिंदू धर्म में वर्णित हुआ है, कुफ़्र व शिर्क है।

(2) जो तरीक़े पूजा व उपासना के वह अपनाते हैं या मुरादें चाहतें हैं जैसे मूर्तियों की परिक्रमा करना (फेरे लगाना), बलि देना, भेंट चढ़ाना, यज्ञ करना, पकवान पकाकर चढ़ाना, यात्रा करना आदि। ये सब बातें कुफ़्र व शिर्क हैं।

(3) अगर किसी मुसलमान को इस तरह के कार्य को करने या ज़ुबान से कहने पर ऐसे विवश किया जाए कि जान जाने का विश्वास या ग़ालिब गुमान हो तो एतक़ाद (विश्वास) के बगैर केवल ज़ुबान से कुफ़्र के शब्द कहने की अनुमति है। इस से कुफ़्र व शिर्क नहीं होता।

﴿...إِلَّا مَنۡ أُكۡرِهَ وَقَلۡبُهُۥ مُطۡمَئِنُّۢ بِٱلۡإِيمَٰنِ... ﴾ [النحل: 106]

अल्लाह हम सबको इस से बचने की तौफ़ीक़ अता फ़रमाए और ईमान पर ख़ातमा नसीब फ़रमाए। आमीन

# रसूलों पर ईमान

समस्त पैग़म्बर (अलयहिस्सलाम) अल्लाह् के बन्दे एवं मानव ही होते हैं। ईश्वर उन्हें अपने बन्दों तक अपने आदेश पहुंचाने के लिए नियुक्त करता है,वे सत्यवादी होते हैं, कभी झूठ नहीं बोलते,गुनाह् व पाप नहीं करते, ईश्वर की आज्ञा से चमत्कार दिखाते हैं, पूर्ण रूप से ईश्वर के संदेशो को पहुंचाते हैं,उनमें कोई कमी या बढ़ोतरी नहीं करते,न ही किसी संदेश को छुपाते हैं।

अल्लाह् के रसूलों पर ईमान लाने का मतलब यह है कि इस तथ्य पर विश्वास किया जाये और माना जाये कि अल्लाह् ने अपने बन्दों के निर्देशन एवं मार्गदर्शन हेतु समय- समय पर भिन्न-भिन्न क्षेत्रों में अपने चुनिंदा बन्दों को अपने निर्देशन एवं स्वीकृति की नियमावली देकर भेजा है। उन्होंने पूरी सत्यनिष्ठा एवं ईमानदारी के साथ ईश्वरीय संदेश को उसके बन्दों तक पहुंचा दिया,और लोगों को सीधे रास्ते पर लाने के भरपूर प्रयास किये। ये सब पैग़म्बर अल्लाह् के चुनिंदा एवं सच्चे बन्दे थे। उनमें कुछेक के नाम और जीवनी भी पवित्र क़ुरान में हमको बतलाये गये है। जबकि बहुतों के नहीं बतलाये गये।

﴿مِنْهُمْ مَنْ قَصَصْنَا عَلَيْكَ وَمِنْهُمْ مَنْ لَمْ نَقْصُصْ عَلَيْكَ﴾ [غافر: 78]

*अनुवादः "उनमें से कुछ का वर्णन हम आपसे कर चुके हैं और कुछेक का वर्णन हमने नहीं किया है"।*

बहरहाल, ईश्वर के इन सब रसूलों को सत्य जानना एवं पैग़म्बर होने की हैसियत से उनको भरपूर सम्मान देना अनिवार्य है। साथ ही इस बात पर विश्वास करना भी ज़रूरी है कि अल्लाह् ने नबियों एवं रसूलों के इस सिलसिले को हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलयहि वसल्लम पर समाप्त

कर दिया। आप सल्लल्लाहु अलयहि वसल्लम अंतिम नबी एवं रसूल हैं। अब क़यामत तक पैदा होने वाले सभी इंसानों के लिए मुक्ति एवं सफ़लता आप सल्लल्लाहु अलयहि वसल्लम ही के मार्गदर्शन में चलने और आप ही के निर्देशों का पालन करने में है।

## रिसालत की ज़रूरत:

अल्लाह ताला ने जिस प्रकार हमारी आवश्यकताओं के लिए सूर्य की रचना की, जिससे हमें गर्मी एवं प्रकाश मिलता है, और जिस प्रकार हमारे लिए भोजन को उत्पन्न करने की व्यवस्था की, उसी प्रकार उसने हमारी और केवल हमारी ज़रूरतों के लिए नबुव्वत की व्यवस्था की,यानी तय किया कि अपने ख़ास एवं चुनिंदा प्रतिनिधियों के माध्यम से अपने समस्त बन्दों तक वह अपने निर्देशों एवं क़ानून को पहुंचाया करेगा; इसीलिए आदम अलैहिस्सलाम को भेजते समय ही अल्लाह तआला ने फ़रमाया था।

﴿قُلْنَا اهْبِطُوا مِنْهَا جَمِيعًا ۖ فَإِمَّا يَأْتِيَنَّكُم مِّنِّي هُدًى فَمَن تَبِعَ هُدَايَ فَلَا خَوْفٌ عَلَيْهِمْ وَلَا هُمْ يَحْزَنُونَ﴾ [البقرة: 38]

*अनुवाद: "हमने आदेश दिया: नीचे जाओ इस जन्नत से सबके सब, फिर अगर तुम्हारे पास मेरी ओर से किसी प्रकार का दिशा-निर्देश आये,तो जो व्यक्ति मेरे उन निर्देशों का पालन करेगा तो उसे किसी प्रकार का कोई भय नहीं होगा,और न ऐसे लोग दु:खी होंगे"।*

## नबुव्वत व रिसालत:

विशेष इंसानों को ईश्वर का प्रदान किया हुआ एक पद है, जिसको देकर उन्हें इस उद्देश्य से दुनिया में भेजा गया है कि वे ईश्वरीय आदेश लोगों को बतायें, एवं पुण्य व सत्य का मार्ग उनको दिखायें। वे मार्ग दिखाने वाले(मार्गदर्शक), चेतावनी देने वाले( अग्रदूत), ईश्वर की ओर बुलाने वाले(उपदेशक),ख़ुशख़बरी देने वाला(शुभ समाचार वाहक),

सिखाने वाले (अध्यापक), ईश्वरीय संदेशो को बन्दों तक पहुंचाने वाले(धर्मवक्ता) एवं रौशनी(ज्योति) थे। ईश्वर स्वयं उनसे संवाद करता था,और अपनी बातें उन्हें बतलाता था,वे दूसरे लोगों को बताते थे। वे पैग़म्बर गुनाहों से पवित्र एवं बुराईयों से सुरक्षित थे। वे ईश्वर के सदाचारी एवं अनुमोदित बन्दे थे,और अपने युग के सर्वश्रेष्ठ इंसान थे। उनके सभी कार्य ईश्वर के लिए थे,और ईश्वर उनके लिए था। ये महान व्यक्तित्व अपने कर्तव्य पालन के लिए हर समुदाय में पैदा हुए, जिन्होंने उनको माना,उन्होंने मुक्ति पायी,और जिन्होंने झुठलाया वे नष्ट हो गये उनका विनाश हो गया।

अल्लाह् ताला ने फ़रमाया:

﴿وَلِكُلِّ أُمَّةٍ رَسُولٌ﴾ [يونس: 47]

*अनुवादः "हर समूह के लिए एक रसूल हैं"।*

﴿وَلَقَدْ بَعَثْنَا فِي كُلِّ أُمَّةٍ رَسُولًا﴾ [النحل: 36]

*अनुवादः "और हम हर समूह में कोई न कोई पैग़म्बर भेजते रहे हैं"।*

﴿وَلِكُلِّ قَوْمٍ هَادٍ ۝٧﴾ [الرعد: 7]

*अनुवादः "और हर समूह के लिए मार्गदर्शन करने वाले चले आये हैं"।*

﴿وَإِنْ مِنْ أُمَّةٍ إِلَّا خَلَا فِيهَا نَذِيرٌ ۝٢٤﴾ [فاطر: 24]

*अनुवादः "और कोई समूह ऐसी नहीं हुआ जिसमें कोई डर सुनाने वाला न गुज़रा हो"।*

﴿وَمَا أَرْسَلْنَا مِنْ رَسُولٍ إِلَّا بِلِسَانِ قَوْمِهِ لِيُبَيِّنَ لَهُمْ﴾ [إبراهيم: 4]

*अनुवादः "और हमने सभी पैग़म्बरों को उन्हीं की क़ौम की भाषा में पैग़म्बर बनाकर भेजा है;ताकि उनसे (ईश्वरीय आदेशों को) बयान करें"।*

## माननीय नबियों (अलयहिमुस्सलाम) में भेदभाव जायज़ नहीं:

माननीय नबियों (अलयहिमुस्सलाम) में भेदभाव करने का अर्थ यह है कि उनमें से कुछ को मानें,और कुछ को न मानें। इस्लाम ने इसको वर्जित क़रार दिया है और ये आम हुक्म दिया है कि सभी पैग़म्बरों एवं रसूलों को समान रुप से ईश्वर का सच्चा,वैधानिक,एवं सत्यवादी रसूल व नबी स्वीकार किया जाये।

अल्लाह तआला फ़रमाता है:

﴿إِنَّ الَّذِينَ يَكْفُرُونَ بِاللَّهِ وَرُسُلِهِ وَيُرِيدُونَ أَنْ يُفَرِّقُوا بَيْنَ اللَّهِ وَرُسُلِهِ وَيَقُولُونَ نُؤْمِنُ بِبَعْضٍ وَنَكْفُرُ بِبَعْضٍ وَيُرِيدُونَ أَنْ يَتَّخِذُوا بَيْنَ ذَلِكَ سَبِيلًا۝١٥٠أُولَئِكَ هُمُ الْكَافِرُونَ حَقًّا وَأَعْتَدْنَا لِلْكَافِرِينَ عَذَابًا مُهِينًا۝١٥١وَالَّذِينَ آمَنُوا بِاللَّهِ وَرُسُلِهِ وَلَمْ يُفَرِّقُوا بَيْنَ أَحَدٍ مِنْهُمْ أُولَئِكَ سَوْفَ يُؤْتِيهِمْ أُجُورَهُمْ وَكَانَ اللَّهُ غَفُورًا رَحِيمًا۝١٥٢﴾ [النساء: 150-152]

*अनुवाद: "जो लोग कुफ़्र करते हैं अल्लाह ताला के साथ,और उसके रसूलों के साथ,और (यूं) चाहते हैं कि अल्लाह एवं उसके रसूलों के बीच भेदभाव रखें,और कहते हैं कि हम कुछेक पर तो ईमान लाते हैं और कुछ का इंकार करते हैं और (यूं) चाहते हैं कि एक बीच-बीच का रास्ता प्रस्तावित करें। ऐसे लोग निश्चित रूप से काफ़िर हैं,और काफ़िरों के लिए हमने एक अपमानजनक दण्ड तैयार कर रखा है। और जो लोग अल्लाह पर ईमान रखते हैं और उसके सभी रसूलों पर भी,तथा उनमें से किसी में भेदभाव नहीं करते,उन लोगों को अल्लाह तआला ज़रूर उनका प्रतिफल देंगे। और अल्लाह तआला बड़े ही क्षमाशील हैं बड़े दयावान हैं"।*

एक दूसरी जगह अल्लाह ताला फ़रमाता है :

﴿كُلٌّ آمَنَ بِاللَّهِ وَمَلَائِكَتِهِ وَكُتُبِهِ وَرُسُلِهِ لَا نُفَرِّقُ بَيْنَ أَحَدٍ مِنْ رُسُلِهِ﴾ [البقرة: 285]

*अनुवाद: "सभी के सभी ईमान रखते हैं अल्लाह पर,और उसके फ़रिश्तों पर और उसकी किताबों पर और उसके पैग़म्बरो पर।(और कहते हैं) कि हम उसके पैग़म्बरो में से किसी के भी साथ भेदभाव नहीं करते"।*

कुल मिलाकर अल्लाह तआला ने अपने बन्दों के दिशा निर्देश एवं मार्गदर्शन के लिए असंख्य महापुरुषों को अपना दूत बनाकर भेजा, जिनकी संख्या का ज्ञान अल्लाह ही को है। तथापि उनमें से कुछेक के नाम एवं विवरण का उल्लेख क़ुरान व सुन्नत में मिलता है, उनके बारे में हम जानते हैं। जैसे: हज़रत आदम, हज़रत नूह, हज़रत इब्राहीम, हज़रत इस्माईल, हज़रत इस्हाक़, हज़रत याक़ूब, हज़रत यूसुफ़, हज़रत अय्यूब, हज़रत मूसा, हज़रत हारुन, हज़रत दाऊद, हज़रत सुलेमान, हज़रत यूनुस, हज़रत ज़करिया, हज़रत यहया, हज़रत ईसा अलयहिमुस्सलाम और अंतिम नबी हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलयहि वसल्लम। और कुछ के नाम एवं विवरण हमें मालूम नहीं है।

अल्लाह तआला फ़रमाता है:

﴿إِنَّا أَوْحَيْنَا إِلَيْكَ كَمَا أَوْحَيْنَا إِلَى نُوحٍ وَالنَّبِيِّينَ مِنْ بَعْدِهِ وَأَوْحَيْنَا إِلَى إِبْرَاهِيمَ وَإِسْمَاعِيلَ وَإِسْحَاقَ وَيَعْقُوبَ وَالْأَسْبَاطِ وَعِيسَى وَأَيُّوبَ وَيُونُسَ وَهَارُونَ وَسُلَيْمَانَ وَآتَيْنَا دَاوُودَ زَبُورًا ﴿١٦٣﴾ وَرُسُلًا قَدْ قَصَصْنَاهُمْ عَلَيْكَ مِنْ قَبْلُ وَرُسُلًا لَمْ نَقْصُصْهُمْ عَلَيْكَ وَكَلَّمَ اللَّهُ مُوسَى تَكْلِيمًا ﴿١٦٤﴾﴾ [النساء: 163-164]

*अनुवाद: "हमने आपके पास वही (ईश्वरीय संदेश)भेजी है जैसे नूह के पास भेजी है और उनके बाद अन्य पैग़म्बरों के पास,और हमने इब्राहीम और इस्माईल,और इस्हाक़,और याक़ूब,एवं याक़ूब की संतान,और ईसा,और अय्यूब,और यूनुस और हारून और सुलेमान के पास भेजी थी। और हमने दाऊद को ज़बूर दी थी। और पैग़म्बरों को (संदेशवाहक) बनाया जिनका वर्णन इससे पहले हम आपसे कर चुके हैं,और ऐसे पैग़म्बर जिनका वर्णन हमने आपसे नहीं किया,और मूसा से अल्लाह ने विशेष रूप से संवाद किया"।*

## ईमान तो सभी पैग़म्बरों (अलयहिमुस्सलाम) पर, परन्तु पालन केवल अपने काल के नबी की शरीयत का करना होगा:

सभी पैग़म्बरों पर ईमान लाना अनिवार्य है,अपितु आज्ञाकारिता एवं अनुपालन केवल अपने काल के नबी का किया जाता है,अर्थात सभी

रसूलों एवं पैग़म्बरों को वैधानिक और अल्लाह् तआला के आदेशों एवं संदेशों को बन्दों तक पहुंचाने वाले और हर प्रकार के गुनाह से सुरक्षित व मासूम मानना अनिवार्य है। चाहे हमें उनके नाम व विवरण पता हो या न हो, तथापि हर नबी व रसूल की शरीयत उसके काल के लोगों के लिए थी, जबकि अंतिम नबी की शरीयत ऐसी परिपूर्ण एवं व्यापक है कि क़यामत तक के लिए है। बस अब इसी का पालन करने से मुक्ति मिलेगी,और यही ईश्वर के दरबार में स्वीकार्य होगी।

## हज़रत मुहम्मद (सल्लल्लाहु अलयहि वसल्लम) से संबंधित आस्थाएं:

हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलयहि वसल्लम के बारे में ये आस्था रखनी चाहिए कि आप सल्लल्लाहु अलयहि वसल्लम अल्लाह् के बन्दे, एक इंसान एवं रसूल हैं। अल्लाह तआला के बाद समूची सृष्टि में सर्वश्रेष्ठ हैं। आप सल्लल्लाहु अलयहि वसल्लम गुनाहों से मासूम हैं, आप पर अल्लाह ने क़ुरान उतारा है,मेअराज की रात आप सल्लल्लाहु अलयहि वसल्लम को आसमानों पर बुलाया,और जन्नत व दोज़ख़ की सैर कराई,आप सल्लल्लाहु अलयहि वसल्लम ने अल्लाह के आदेश पर बहुत से चमत्कार दिखाये हैं,आप सल्लल्लाहु अलयहि वसल्लम अल्लाह् तआला की अत्यधिक इबादत करते थे,आप सल्लल्लाहु अलयहि वसल्लम के संस्कार एवं आचरण बहुत ही उच्चकोटि का था, आप सल्लल्लाहु अलयहि वसल्लम को अल्लाह् तआला ने बहुत सी पिछली एवं अगली बातों का ज्ञान दिया था, जिनके बारे में आप सल्लल्लाहु अलयहि वसल्लम ने अपने अनुयायियों को सूचित किया है,आप सल्लल्लाहु अलयहि वसल्लम को अल्लाह् तआला ने समूची सृष्टि से अधिक ज्ञान दिया था। परन्तु आप सल्लल्लाहु अलयहि वसल्लम के पास अनदेखी वस्तुओं का परालौकिक ज्ञान नहीं था, क्योंकि परालौकिक ज्ञान केवल ईश्वर ही के अनूकूल है और उसी की विशेषता है। आप सल्लल्लाहु अलयहि वसल्लम अंतिम नबी हैं जिसका अर्थ है कि आपके बाद कोई नया नबी नहीं आयेगा, हां हज़रत

ईसा अलयहिस्सलाम जो पूर्वकाल के नबी हैं, जिनको जीवित आसमान पर उठा लिया गया था वह आसमान से उतरेंगे एवं इस्लामी शरीयत के अनुसार कार्य करेंगे। आप सल्लल्लाहु अलयहि वसल्लम इंसानों एवं जिन्नात सभी के नबी हैं,क़यामत के दिन अल्लाह के आदेश पर गुनाहगारों व पापियों की सिफ़ारिश करेंगे, और अल्लाह तआला आप सल्लल्लाहु अलयहि वसल्लम की सिफ़ारिश को स्वीकार करेंगे। आप सल्लल्लाहु अलयहि वसल्लम ने जिन बातों को करने का आदेश दिया है उनका पालन करना और जिनसे रोका है उनसे रुक जाना, और जिन घटनाओं की ख़बर दी है उनको उसी रूप में मानना एवं विश्वास करना आपके अनुयायियों के लिए आवश्यक है। आप सल्लल्लाहु अलयहि वसल्लम से प्रेम करना, और आप सल्लल्लाहु अलयहि वसल्लम से श्रद्धा व आपका सम्मान करना हर अनुयायी के लिए अनिवार्य है; लेकिन श्रद्धा से तात्पर्य वैसी ही श्रद्धा है जो शरीयत के नियमानुसार हो, शरीयत विरोधी बातों को श्रद्धा समझना मूर्खता है।

## नबुव्वत की समाप्ति पर ईमान:

रसूलों पर ईमान हेतु इस बात पर भी ईमान ज़रूरी है कि मुहम्मद सल्लल्लाहु अलयहि वसल्लम से पहले अनगिनत नबी (अलयहिमुस्सलाम)आते रहे,हर युग एवं हर समूह में नबियों का आगमन हुआ है,किन्तु मुहम्मद सल्लल्लाहु अलयहि वसल्लम अंतिम नबी हैं,आप सबसे आख़िरी नबी हैं,नबुव्वत का सिलसिला आप सल्लल्लाहु अलयहि वसल्लम पर समाप्त हो गया,अब क़यामत तक कोई नबी आने वाला नहीं है। अल्लाह फ़रमाता है:

﴿مَا كَانَ مُحَمَّدٌ أَبَا أَحَدٍ مِنْ رِجَالِكُمْ وَلَكِنْ رَسُولَ اللَّهِ وَخَاتَمَ النَّبِيِّينَ وَكَانَ اللَّهُ بِكُلِّ شَيْءٍ عَلِيمًا﴾ [الأحزاب: 40]

*अनुवाद: "मुहम्मद सल्लल्लाहु अलयहि वसल्लम तुम्हारे मर्दोंमें किसी के बाप नहीं हैं; लेकिन अल्लाह के रसूल हैं,सब नबियों की समाप्ति पर हैं, और अल्लाह हर चीज़ को ख़ूब जानता है"।*

सार यह है कि अल्लाह ताला हर युग में अपने पैग़म्बरों को भेजता रहा,और अपने निर्देशों को उनके माध्यम से बन्दों तक पहुंचाता रहा,अंत में नबियों के सरदार मुहम्मद सल्लल्लाहु अलयहि वसल्लम को भेजकर इस सिलसिले को समाप्त कर दिया; यही कारण है कि हम समस्त पैग़म्बरों में विश्वास रखते हैं,अंतिम नबी मुहम्मद सल्लल्लाहु अलयहि वसल्लम का अनुपालन करते हैं,और आप सल्लल्लाहु अलयहि वसल्लम के अंतिम नबी होने पर विश्वास करते हैं।

❋ ❋ ❋ ❋ ❋

❋ ❋ ❋

# फ़रिश्तों पर ईमान

फ़रिश्ते भी अल्लाह तआला द्वारा रचित प्राणी हैं,जिनका सर्जन नूर (ज्योति) से हुआ, हमारीं निगाहों से अदृश्य हैं, न पुरुष हैं न महिला हैं,अल्लाह तआला की अवहेलना एवं गुनाह नहीं करते,जिन कार्यों पर अल्लाह ताला ने उन्हें नियुक्त कर दिया है उन्हीं में लगे रहते हैं।

﴿لَا يَعْصُونَ اللَّهَ مَا أَمَرَهُمْ وَيَفْعَلُونَ مَا يُؤْمَرُونَ۝٦﴾ [التحريم: 6] (अल्लाह की नाममात्र भी अवहेलना नहीं करते किसी ऐसी बात में जिसका उनको आदेश देता है,और वही करते हैं जिसका उनको आदेश दिया जाता है)।

फ़रिश्तों पर ईमान लाने का अर्थ यह है कि उनके अस्तित्व को वास्तविक माना जाये और ये विश्वास किया जाये कि वे अल्लाह की एक पवित्र और सम्मानित सृष्टि हैं। ﴿بَلْ عِبَادٌ مُكْرَمُونَ۝٢٦﴾ [الأنبياء: 26] (बल्कि वे अल्लाह के माननीय बन्दे हैं)। न तो उनमें दुष्टता है,और न ही अवहेलना एवं विद्रोह के तत्व; बल्कि उनका कार्य केवल अल्लाह की आराधना एवं अनुपालन है।

## फ़रिश्तों के कार्य:

1) संदेश पहुंचाना : अर्थात ईश्वरीय संदेशो व आदेशों को बन्दों तक पहुंचाना, क़ुरान कहता है:

﴿اللَّهُ يَصْطَفِي مِنَ الْمَلَائِكَةِ رُسُلًا وَمِنَ النَّاسِ إِنَّ اللَّهَ سَمِيعٌ بَصِيرٌ۝٧٥ يَعْلَمُ مَا بَيْنَ أَيْدِيهِمْ وَمَا خَلْفَهُمْ وَإِلَى اللَّهِ تُرْجَعُ الْأُمُورُ۝٧٦﴾ [الحج: 75-76]

*अनुवादः "अल्लाह तआला (को अधिकार है कि संदेश भेजने के लिए जिसको चाहता है) चुन लेता है फ़रिश्तों में से (जिनको चाहे) आदेश पहुंचाने के लिए*

*(नियुक्त कर देता है)और(इसी प्रकार) आदमियों में से, वास्तव में अल्लाह तआला भली भांति सुनने वाला,भली भांति देखने वाला है।(अर्थात)वह(उन सभी फ़रिश्तों एवं आदमियों)की अगली व पिछली हालतों से (भली भांति)परिचित है,और सभी कार्य अल्लाह ही पर निर्भर है।(अर्थात वह आत्म निर्भर स्वामी है)।*

2) ब्रह्मांड में ईश्वर के आदेशानुसार कार्य करना, और उसके आदेशों को लागू करना। क़ुरान कहता है:

﴿إِذْ يُوحِي رَبُّكَ إِلَى الْمَلَائِكَةِ أَنِّي مَعَكُمْ فَثَبِّتُوا الَّذِينَ آمَنُوا﴾ [الأنفال: 12]

*अनुवाद:"(और उस समय को याद करो) जबकि आपका रब (उन) फ़रिश्तों को आदेश देता था मैं तुम्हारा साथी(व मददगार) हूं, इसलिए (मुझको मददगार समझकर) तुम ईमान लाने वालों का मनोबल बढ़ाओ"।*

दूसरी जगह है :

﴿تَنَزَّلُ الْمَلَائِكَةُ وَالرُّوحُ فِيهَا بِإِذْنِ رَبِّهِمْ مِنْ كُلِّ أَمْرٍ﴾ [القدر: 4]

*अनुवाद:(और वह क़द्र की रात ऐसी है कि) उस रात में फ़रिश्ते एवं रुहु अल क़ुद्स(यानी जिब्रील अलयहिस्सलाम) अपने मालिक के आदेश से हर पुण्य को लेकर (पृथ्वी की ओर) उतरते हैं"।*

3) लोगों का बही-खाता लिखना। क़ुरान कहता है:

﴿وَإِنَّ عَلَيْكُمْ لَحَافِظِينَ ۝ كِرَامًا كَاتِبِينَ﴾ [الانفطار: 10-11]

*अनुवाद: "और तुम पर (तुम्हारे सब पाप-पुण्य) याद रखने वाले। सम्मानित लिखने वाले नियुक्त हैं"।*

4) रुह निकालना। क़ुरान में है:

﴿وَلَوْ تَرَى إِذْ يَتَوَفَّى الَّذِينَ كَفَرُوا الْمَلَائِكَةُ﴾ [الأنفال: 50]

*अनुवाद: और अगर आप( उस समय की घटना) देखें; "जबकि फ़रिश्ते इन (उपस्थित) काफ़िरों की जान निकालते जाते हैं"।*

5) दुआ एवं ईश्वर से क्षमायाचना करना। क़ुरान में है:

﴿هُوَ الَّذِي يُصَلِّي عَلَيْكُمْ وَمَلَائِكَتُهُ﴾ [الأحزاب: 43]

*अनुवादः "वह ऐसा (दयालु) है कि वह (स्वयं) एवं उसके फ़रिशते(भी) तुम पर रहमत भेजते हैं"।*

"निश्चित रूप से अल्लाह तआला एवं उसके फ़रिशते रहमत भेजते हैं, इन पैग़म्बर पर"।"और पृथ्वी वालों के लिए क्षमायाचना करते हैं"।

कुल मिलाकर फ़रिश्तों को अल्लाह तआला ने विभिन्न कार्य सौंप रखे हैं,जैसे ईश्वरीय संदेश लाना, (क़यामत के क़रीब) बिगुल(सूर) बजाना, बारिश बरसाना,रूह खींचना,दोज़ख़ में यातनाओं का निरीक्षण,जन्नत में जन्नतवासियों को सलाम करना,अर्श को उठाना अल्लाह की वंदना एवं महिमा मंडन करना आदि।

## फ़रिश्तों पर ईमान लाना अनिवार्य है:

जिन चीज़ों पर ईमान लाना अनिवार्य एवं अपरिहार्य है,अर्थात जिन पर ईमान लाए बग़ैर इंसान मोमिन नहीं हो सकता उनमें फ़रिश्तों पर ईमान लाना भी अनिवार्य है। अल्लाह तआला फ़रमाता है:

﴿آمَنَ الرَّسُولُ بِمَا أُنْزِلَ إِلَيْهِ مِنْ رَبِّهِ وَالْمُؤْمِنُونَ كُلٌّ آمَنَ بِاللَّهِ وَمَلَائِكَتِهِ وَكُتُبِهِ وَرُسُلِهِ﴾ [البقرة: 285]

*अनुवादः "रसूल ईमान रखते हैं उस पर जो उनके मालिक की ओर से उन पर उतारा गया है,और ईमान वाले भी, सब के सब ईमान रखते हैं अल्लाह पर और उसके फ़रिश्तों पर और उसकी किताबों पर और उसके पैग़म्बरों पर"।*

निचोड़ ये है कि हम सभी फ़रिश्तों पर ईमान रखते हैं कि वे सब गुनाह एवं पापों से पवित्र हैं,चाहे हम उनके नाम एवं कार्य से परिचित हों या न हों,संक्षेप में हर ईमान वाले को फ़रिश्तों पर ईमान एवं विश्वास रखना आवश्यक है।

# अल्लाह की किताबों पर ईमान

अल्लाह तआला की छोटी-बड़ी बहुत सी किताबें पैग़म्बरों पर उतरीं,उनमें से बड़ी किताबों को किताब और छोटी किताबों को सहीफ़े(ग्रन्थ) कहते है, चार आसमानी किताबें प्रसिद्ध हैं:

1) तौरात : हज़रत मूसा अलयहिस्सलाम पर उतरी।

2) ज़बूर : हज़रत दाऊद अलयहिस्सलाम पर उतरी।

3) इंजील: हज़रत ईसा अलयहिस्सलाम पर उतरी।

4) पवित्र क़ुरान: हमारे पैग़म्बर हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलयहि वसल्लम पर उतरा।

**सहीफ़ों** की संख्या मालूम नहीं,अपितु कुछ सहीफ़े हज़रत शुऐब अलयहिस्सलाम पर,कुछ हज़रत इब्राहीम अलयहिस्सलाम पर और कुछ सहीफ़े हज़रत मूसा अलयहिस्सलाम पर उतरे।

अल्लाह की किताबों पर ईमान लाने का अर्थ यह है कि ये विश्वास किया जाए एवं माना जाये कि अल्लाह ने अपने रसूलों के माध्यम से समय-समय पर अपने संदेश भेजे इनमें सबसे अंतिम एवं निर्णायक पवित्र क़ुरान है। पहली किताबों में जितनी ऐसी बातें थीं जिनकी शिक्षा-दीक्षा की हर काल में आवश्यकता होती है वे सभी इस क़ुरान में ले ली गई हैं,अर्थात यह क़ुरान समस्त आसमानी किताबों के विषयों पर आधारित है और समस्त (किताबों)से बेपरवाह कर देने वाली ईश्वर की अंतिम किताब है; फिर क्योंकि वे किताबें अब सुरक्षित नहीं रही, इसलिए अब केवल क़ुरान ही एकमात्र मार्गदर्शक किताब है जो सब की प्रतिनिधि एवं सबसे अधिक पूर्ण है,इसलिए अंतिम समय तक इसकी सुरक्षा की ज़िम्मेदारी स्वयं अल्लाह तआला ने ली है:

﴿إِنَّا نَحْنُ نَزَّلْنَا الذِّكْرَ وَإِنَّا لَهُ لَحَافِظُونَ۝٩﴾ [الحجر: 9]

*अनुवाद : "हम ही ने क़ुरान उतारा है,और हम ही इसके रक्षक हैं"।*

कुल मिलाकर समस्त आसमानी किताबें चाहे वे अपने उसी मौलिक रूप में हों जिसमें वे उतारी गई,जैसे पवित्र क़ुरान,अथवा मौलिक रूप में न हों, बल्कि उनमें बदलाव कर दिया गया हो,जैसे दूसरी आसमानी किताबें,सभी पर ईमान अनिवार्य है,ईश्वर का फ़रमान है:

﴿آمَنَ الرَّسُولُ بِمَا أُنْزِلَ إِلَيْهِ مِنْ رَبِّهِ وَالْمُؤْمِنُونَ كُلٌّ آمَنَ بِاللَّهِ وَمَلَائِكَتِهِ وَكُتُبِهِ وَرُسُلِهِ لَا نُفَرِّقُ بَيْنَ أَحَدٍ مِنْ رُسُلِهِ وَقَالُوا سَمِعْنَا وَأَطَعْنَا غُفْرَانَكَ رَبَّنَا وَإِلَيْكَ الْمَصِيرُ﴿٢٨٥﴾﴾
[البقرة: 285]

*अनुवादः ........."सभी के सभी ईमान रखते हैं अल्लाह पर,और उसके फ़रिश्तों पर और उसकी किताबों पर और उसके पैग़म्बरों पर"।*

दूसरे स्थान पर ईश्वरीय कथन देखिए :

﴿وَالَّذِينَ يُؤْمِنُونَ بِمَا أُنْزِلَ إِلَيْكَ وَمَا أُنْزِلَ مِنْ قَبْلِكَ﴾ [البقرة: 4]

*अनुवाद :"और वे लोग ऐसे हैं कि ईमान रखते हैं उस किताब पर भी जो आपकी ओर उतारी गई है और उन किताबों पर भी जो आपसे पहले उतारी जा चुकी हैं"।*

## पवित्र क़ुरान पर ईमान:

अगर कोई इंसान अल्लाह पर ईमान रखता है और दूसरी चीज़ों उदाहरणत:रसूलों, फ़रिश्तों,और पुनर्जीवन के दिन आदि पर भी ईमान रखता हो, मगर अल्लाह की किताबों पर ईमान न रखता हो तो वह मोमिन(आस्तिक) नहीं,अर्थात इस्लाम धर्म में उसका ईमान विश्वसनीय नहीं है।

इसी प्रकार अगर ईश्वर का कोई बन्दा पवित्र क़ुरान एवं दूसरी आसमानी किताबों पर ईमान एवं विश्वास रखने के साथ पवित्र क़ुरान के दिशा-निर्देशों को छोड़कर किसी दूसरी आसमानी किताब के निर्देशों को मुक्तिमार्ग जाने एवं माने तो वह भी मोमिन नहीं है।

# आख़िरत (परलोक) पर ईमान

क़यामत का दिन उस दिन को कहते हैं जिस दिन समस्त इंसान एवं जीव-जंतु मर जायेंगे, दुनिया नष्ट हो जायेगी,पहाड़ रूई की तरह उड़ते फिरेंगे, सितारे टूटकर गिर पड़ेंगे, सूर्य एवं चन्द्रमा ज्योति विहीन जायेंगे,कुल मिलाकर हर चीज़ टूट फूटकर नष्ट हो जायेगी।

क़यामत और परलोक पर ईमान का अर्थ ये है कि इस वास्तविकता पर विश्वास किया जाए,और माना जाये कि ये दुनिया एक दिन निश्चित रूप से नष्ट हो जायेगी,इसके बाद अल्लाह तआला अपनी विशेष शक्ति से फिर सारे मुर्दों को जीवित करेगा,और यहां (दुनिया में) जिसने जैसा कुछ किया होगा उसी के अनुसार उसको प्रतिफल अथवा दंड दिया जायेगा।

## क़यामत की आवश्यकता:

ये बात सद्बुद्धि एवं ईश्वर और उसके रसूल पर ईमान रखने वाला कोई भी व्यक्ति सरलतापूर्वक समझ सकता है कि उसका सांसारिक जीवन उसके मरणोपरांत जीवन की एक भूमिका है,क्योंकि इस सांसारिक जीवन में पुण्यकर्म,परोपकार एवं भले काम करना,बुराईयों से बचना,अपने मालिक की कृपादृष्टि एवं हमेशा रहने वाली जन्नत में प्रवेश हेतु आवश्यक है,और इसी तरीक़े से जहन्नम कि यातनाओं से मुक्ति प्राप्त की जा सकती है।

मतलब ये है कि इस सांसारिक जीवन के पश्चात एक और जीवन और एक और संसार आने वाला है,वहां इन्सान को इस दुनिया में किये हुए बुरे एवं भले कार्यों का प्रतिफल व दंड मिलेगा,और ये बात हर व्यक्ति की समझ में आ सकती है कि हमारे इस सांसारिक जीवन में बहुत से लोग बड़ी-बड़ी बुराईयां करते हैं,डाके मारते हैं, ग़रीबों का ख़ून चूसते हैं, रिश्वतें

लेते हैं, निर्बलों पर अत्याचार करते हैं,लोगों के हक़ मारते हैं, एवं जीवनभर ऐश उड़ाकर इसी प्रकार और इसी हाल में मर जाते हैं,इसी प्रकार बहुत से अल्लाह के बन्दे बड़े पुण्य कर्म व परोपकार करते हैं, किसी पर अत्याचार नहीं करते,किसी के साथ विश्वासघात नहीं करते किसी का हक़ नहीं मारते,अल्लाह की आराधना एवं इबादत करते हैं,उसकी रचित सृष्टि की सेवा भी करते हैं,इसके बावजूद उनका सारा जीवन अभाव एवं कठिनाइयों में गुज़रता है,कभी कोई बीमारी,कभी कोई कठिनाई,इसी चिंता में वे इस दुनिया से चले जाते हैं।

ये दुनिया जब अल्लाह तआला द्वारा रचित है,और अल्लाह तआला हमारे अच्छे-बुरे सब कार्य देखता है, इधर हम देखते हैं कि भलाई करने वालों को उनकी भलाई का फल एवं परिणाम नहीं मिल रहा है,और दोषियों एवं पापियों को उनके दोष एवं पाप का दंड नहीं दिया जा रहा है, तो स्वत: ये बात समझ में आती है कि फिर अल्लाह तआला की ओर से यह प्रतिफल एवं दण्ड किसी दूसरे जीवन में मिलना चाहिए, यह तो नहीं हो सकता कि अल्लाह तआला के यहां ऐसा अंधेर हो कि न तो पुण्यकर्मों का कोई मूल्य हो और न ही उपद्रवियों व अत्याचारियों से कोई पूछताछ,सारे धर्मात्माओं और चोरों व डाकुओं के साथ अंधेरनगरी वाला ही व्यवहार हो,अल्लाह की हस्ती तो बहुत ही महान है,ये कार्यशैली तो किसी सज्जन मनुष्य को भी शोभा नहीं देता कि वह सज्जनों एवं दुष्टों,अत्याचारियों एवं पीड़ितों के साथ समान व्यवहार करे।

पवित्र क़ुरान ने में है:

﴿أَفَنَجْعَلُ الْمُسْلِمِينَ كَالْمُجْرِمِينَ﴾ [القلم: 35]

*अनुवादः "क्या हम आज्ञाकारियों को पापियों के समान कर देंगे?"।*

दूसरे स्थान पर अल्लाह कहता है:

﴿أَمْ حَسِبَ الَّذِينَ اجْتَرَحُوا السَّيِّئَاتِ أَنْ نَجْعَلَهُمْ كَالَّذِينَ آمَنُوا وَعَمِلُوا الصَّالِحَاتِ سَوَاءً مَحْيَاهُمْ وَمَمَاتُهُمْ سَاءَ مَا يَحْكُمُونَ﴾ [الجاثية: 21]

*अनुवादः "ये लोग जो बुरे बुरे काम करते हैं क्या इनका अनुमान है कि हम इनको उन लोगों के बराबर रखेंगे जिन्होंने ईमान एवं पुण्य कार्य किए कि उन सब का जीना और मरना समान हो जाए, ये बुरा निर्णय लेते हैं"।*

कुल मिलाकर इस दुनिया में प्रतिफल एवं दण्ड न होने से स्वत: यह बात समझ में आ जाती है कि इस सांसारिक जीवन के पश्चात कोई और जीवन ऐसा होना चाहिए जिसमें लोगों को उनके किये का प्रतिफल एवं दण्ड मिले, इसी लोक को जिसमें प्रतिफल एवं दण्ड मिलेगा,परलोक, क़यामत एवं बदले का दिन कहते हैं।

## क़यामत की वास्तविकता:

क़यामत एक अत्यधिक भयानक एवं भयावह परलोक का एक चरण है,पवित्र क़ुरान और पवित्र हदीस में क़यामत की विभिन्न विशेषताएं बताई गई हैं, उदाहरणतः क़यामत की कुछ विशेषताएं देखिए: "अलक़ारिआ:संकट का संकेत देने वाली।अलवाक़िआ:घटित होने वाली। अलहाक़्क़ा: अवश्यंभावी"

क़यामत के दिन धरती और पहाड़ चूर चूर हो जायेंगे, क़यामत के दिन धरती और पहाड़ों में भारी कंपन होगा, क़यामत के दिन धरती पर भूकम्प आ जायेगा,और वह अपने अन्दर गड़ी हुई वस्तुओं को निकालकर बाहर फेंक देगी,क़यामत के दिन आसमान फट जायेगा, सितारे टूटकर गिर पड़ेंगे, सागर धाराप्रवाह होंगे, आसमान में दरवाज़े ही दरवाज़े हो जायेंगे, आदि।

ईश्वरीय वाणी है:

﴿يَا أَيُّهَا النَّاسُ اتَّقُوا رَبَّكُمْ إِنَّ زَلْزَلَةَ السَّاعَةِ شَيْءٌ عَظِيمٌ ۝ يَوْمَ تَرَوْنَهَا تَذْهَلُ كُلُّ مُرْضِعَةٍ عَمَّا أَرْضَعَتْ وَتَضَعُ كُلُّ ذَاتِ حَمْلٍ حَمْلَهَا وَتَرَى النَّاسَ سُكَارَى وَمَا هُمْ بِسُكَارَى وَلَكِنَّ عَذَابَ اللَّهِ شَدِيدٌ﴾ [الحج: 1-2]

*अनुवादः "ऐ लोगो! अपने मालिक से डरो, क़यामत का भूकंम बड़ा सख़्त मामला है। जिस दिन हर दूध पिलाने वाली अपने बच्चो को भूल जाएगी और गर्भवती अपने बच्चे को जन्म दे देगी और तुम लोगों को नशे में मस्त देखोगे जबकि उनको नशा ना होगा लेकिन अल्लाह की पकड़ बड़ी सख़्त है।*

﴿وَفُتِحَتِ السَّمَاءُ فَكَانَتْ أَبْوَابًا ۝١٩ وَسُيِّرَتِ الْجِبَالُ فَكَانَتْ سَرَابًا ۝٢٠﴾

[النبأ: 19-20]

*अनुवादः "और आसमान खुल जायेगा, फिर उसमें दरवाज़े ही दरवाज़े हो जायेंगे, और पहाड़ (अपने स्थान) से हटा दिये जायेंगे, तो वे रेत की तरह हो जायेंगे"।*

दूसरे स्थान पर है:

﴿إِنَّمَا تُوعَدُونَ لَوَاقِعٌ ۝٧ فَإِذَا النُّجُومُ طُمِسَتْ ۝٨ وَإِذَا السَّمَاءُ فُرِجَتْ ۝٩

وَإِذَا الْجِبَالُ نُسِفَتْ ۝١٠﴾ [المرسلات: 7-10]

*अनुवादः जिस चीज़ का तुमसे वादा किया जाता है, वह निश्चित रूप से होने वाली है, (अभिप्राय क़यामत है)(7), बस जब सितारे ज्योति विहीन हो जायेंगे(8),और जब आसमान फट जायेगा(9),और जब पहाड़ उड़ते फिरेंगे(10)"।*

## क़यामत अत्यन्त निकट है:

अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलयहि वसल्लम ने फ़रमाया:

بُعِثْتُ أَنَا وَالسَّاعَةَ كَهَاتَيْنِ [بخاري و مسلم]

*अनुवादः "मैं और क़यामत इन दो उंगलियों के मानिंद हैं"*

मतलब यह है कि हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलयहि वसल्लम ने तर्जनी उंगली और उसके बराबर वाली उंगली को मिलाकर फ़रमाया: मेरे अवतरित होने एवं क़यामत बरपा होने में इतनी निकटता एवं संबंध है

जितना कि इन दो उंगलियों में। इससे संभवत आप सल्लल्लाहु अलयहि वसल्लम का तात्पर्य यह था कि अल्लाह ताला ने इस दुनिया के जितने काल निश्चित किये हैं वे सभी समाप्त हो जायेंगे,अब यह काल इसका अंतिम काल है,जो मेरे अवतरित होने से आरंभ हुआ है,और क़यामत पर समाप्त होगा, मेरे और क़यामत के बीच कोई नया नबी नहीं आयेगा,न कोई नया "जनसमूह" जन्म लेगा; अतः क़यामत को बहुत दूर समझकर उसकी ओर से बेफ़िक्र एवं असावधान न होना चाहिए। ईश्वरीय वाणी है:

﴿اقْتَرَبَتِ السَّاعَةُ﴾ [القمر: 1]

*अनुवादः "क़यामत निकट आ पहुंची है"।*

## क़यामत के निश्चित समय का ज्ञान केवल अल्लाह को है:

पवित्र क़ुरान से और हदीसों से भी विदित होता है कि बहुत से लोग रसूलुल्ललाह सल्लल्लाहु अलयहि वसल्लम से क़यामत के संबंध में पूछते थे कि वह कब आयेगी? आप सल्लल्लाहु अलयहि वसल्लम हमेशा यही फ़रमाते थे: "وإنَّمَا عِلْمُهَا عِنْدَ اللهِ" इसका निश्चित समय तो बस अल्लाह ही को पता है। अर्थात वही जानता है कि किस सन् के किस महीने की किस तारीख़ को क़यामत आयेगी,इसका ज्ञान अल्लाह ने किसी और को नहीं दिया है, ईश्वरीय वाणी है:

﴿إِنَّ اللَّهَ عِنْدَهُ عِلْمُ السَّاعَةِ﴾ [لقمان: 34]

*अनुवादः "अल्लाह ही के पास है क़यामत आदि का ज्ञान"।*

﴿يَسْأَلُونَكَ عَنِ السَّاعَةِ أَيَّانَ مُرْسَاهَا ۝٤٢ فِيمَ أَنْتَ مِنْ ذِكْرَاهَا ۝٤٣ إِلَى رَبِّكَ مُنْتَهَاهَا ۝٤٤﴾
[النازعات: 42-44]

*अनुवादः"लोग आपसे क़यामत के संबंध में प्रश्न करते हैं कि वह कब घटित होगी,उसके विवरण से आपका क्या संबंध,आपके मालिक के पास है उसका निर्णायक (ज्ञान)"।*

## क़यामत का बिगुल:

जब दुनिया अल्लाह की याद से एवं उसका स्मरण करने वालों से पूर्णतः ख़ाली हो जायेगी,अल्लाह की आराधना एवं इबादत,आज्ञाकारिता एवं अल्लाह के साथ भक्ति के सही संबंध का दुनिया से पूर्ण रूप से अन्त हो जायेगा,उस समय अल्लाह तआला के आदेश पर हज़रत इस्राफ़ील अलयहिस्सलाम बिगुल में फूंक मारेंगे,और ये दुनिया एवं सम्पूर्ण ब्रह्माण्ड नष्ट हो जायेगा; क्योंकि दुनिया के अस्तित्व का औचित्य केवल अल्लाह के स्मरण,उसकी आराधना एवं इबादत और उसकी सच्ची याद के कारण है, मुस्लिम शरीफ़ की हदीस है: [مسلم شريف] " لَا تَقُومُ السَّاعَةُ إِلَّا عَلَى شِرَارِ الخلق" अर्थात क़यामत की घटना केवल दुष्टों पर ही घटित होगी

बिगुल बजने के संबंध में ईश्वरीय वाणी है: ﴿فَإِذَا نُفِخَ فِي الصُّورِ﴾ [المؤمنون: 101] अनुवाद :"फिर जब बिगुल में फूंक मार दी जायेगी"।

दूसरे स्थान पर है:

﴿يَوْمَ يُنْفَخُ فِي الصُّورِ فَتَأْتُونَ أَفْوَاجًا۝١٨﴾ [النبأ: 18]

*अनुवादः "अतः जब बिगुल फूंका जायेगा तो तुम लोग समूहों के रूप में आओगे"।*

## अरबों का क़यामत को अस्वीकार करना:

अरब ऐकश्वरवाद के बाद जिस आस्था को दृढ़ता से अस्वीकार करते थे,और जिसे मानने पर किसी प्रकार भी तैयार नहीं होते थे,जो उनकी बुद्धि में किसी प्रकार नहीं समाता था,वह यही क़यामत, मृत्यु के बाद जीवन और पुनरुथान एवं एकत्र होने का मामला है,अज्ञानता से भरपूर काल में अरब मृत्यु के बाद जीवन,ईश्वर के समक्ष अपने कर्मों की जवाबदेही, आराधना, प्रतिफल एवं दण्ड से पूर्णतः अभिनज्ञ थे; यही कारण है कि उनमें कार्यों के अच्छा-बुरा और पुण्य एवं पाप होने का बोध नहीं था जिस पर आचरण एवं लेन-देन निर्भर करते हैं।

पवित्र क़ुरान में बड़ी मात्रा मे उनके कथनों को उद्धत किया गया है, उदाहरणतः

﴿ ءَإِذَا مِتْنَا وَكُنَّا تُرَابًا ۖ ذَٰلِكَ رَجْعٌ بَعِيدٌ ﴿٣﴾ [ق: 3]

*अनुवादः "क्या जब हम मर जायेंगे,और मिट्टी हो जायेंगे? ये लौटना तो बहुत दूर है"।*

﴿أَإِنَّا لَمَرْدُودُونَ فِي الْحَافِرَةِ ﴿١٠﴾ أَإِذَا كُنَّا عِظَامًا نَّخِرَةً ﴿١١﴾ قَالُوا تِلْكَ إِذًا كَرَّةٌ خَاسِرَةٌ ﴿١٢﴾﴾ [النازعات: 10-12]

*अनुवादः "क्या हम दोबारा उल्टे पांव लौटाए जायेंगे, क्या जब हम सड़ी हुई हड्डियां हो जायेंगे? तो कहने लगे इस अवस्था में तो यह घाटे का लौटना होगा"।*

﴿مَنْ يُحْيِي الْعِظَامَ وَهِيَ رَمِيمٌ ﴿٧٨﴾﴾ [يس: 78]

*अनुवाद :"इन सड़ी गली हड्डियों को कौन जीवन देगा"?*

﴿وَقَالُوا إِنْ هِيَ إِلَّا حَيَاتُنَا الدُّنْيَا وَمَا نَحْنُ بِمَبْعُوثِينَ ﴿٢٩﴾﴾ [الأنعام: 29]

*अनुवादः"उन्होंने कहा कि यही हमारा वर्तमान जीवन है हम दोबारा नहीं उठाये जायेंगे"।*

﴿إِنَّهُمْ كَانُوا لَا يَرْجُونَ حِسَابًا ﴿٢٧﴾﴾ [النبأ: 27]

*अनुवादः" वे हिसाब की आशा नहीं रखते"।*

## कुफ़्फ़ार (इंकारियों) के इस इंकार का स्वयं क़ुरान ने स्वयं ही खंडन किया है:

पवित्र क़ुरान ने सर्वप्रथम जिन लोगों को संबोधित किया वे यही बहुश्वेरवादी (मुश्रिक) अरब थे; अतः उनके अमान्य सिद्धांतों एवं पथभृष्ट आस्थाओं का खंडन अल्लाह ताला ने स्पष्ट रूप से बल देकर किया है,क़यामत के इंकार का खंडन भी विभिन्न प्रकार से पवित्र क़ुरान में किया गया है, ईश्वरीय वाणी है:

﴿أَيَحْسَبُ الْإِنْسَانُ أَلَّنْ نَجْمَعَ عِظَامَهُ۝ بَلَى قَادِرِينَ عَلَى أَنْ نُسَوِّيَ بَنَانَهُ۝﴾ [القيامة: 3-4]

*अनुवाद:" क्या इंसान यह सोचता है कि हम उसकी हड्डियों को जमा नहीं करेंगे, क्यों नहीं, बल्कि हम तो उसकी उंग्लियों के किनारों तक को दुरुस्त कर देंगे।"*

﴿أَفَحَسِبْتُمْ أَنَّمَا خَلَقْنَاكُمْ عَبَثًا وَأَنَّكُمْ إِلَيْنَا لَا تُرْجَعُونَ۝﴾ [المؤمنون: 115]

*अनुवाद:" ऐ लोगो! क्या तुम समझते हो कि हमने तुमको बेकार पैदा किया है,और तुम हमारी ओर लौटाए नहीं जाओगे?"*

दूसरे स्थान पर है:

﴿أَيَحْسَبُ الْإِنْسَانُ أَنْ يُتْرَكَ سُدًى۝﴾ [القيامة: 36]

*अनुवाद:" क्या इंसान ये समझता है कि वह बेकार छोड़ दिया जायेगा"?।*

## प्रतिफल और दण्ड इस दुनिया में क्यों नहीं दिया जाता:

अल्लाह ने इस दुनिया को परीक्षा एवं आज़माइश का घर बनाया है,और कर्मों के प्रतिफल एवं दण्ड यानी पुरस्कार एवं यातना को अदृश्य रखकर नबियों अलयहिमुस्सलाम के माध्यम से यह ऐलान करवाया कि जो कोई ईश्वरीय आदेशों का पालन करेगा और सदाचारिता के साथ जीवन व्यतीत करेगा उसको अगले जीवन में यह पुरस्कार और बदला मिलेगा,और जो कोई उपद्रव करेगा और विद्रोह एवं अनैतिकता से भरपूर जीवन व्यतीत करेगा उसको ऐसा ऐसा दण्ड मिलेगा,इस अवस्था में अगर बुराई व भलाई का बदला इसी दुनिया में हाथों-हाथ और नक़द मिल जाया करता तो यह परीक्षण नहीं हो सकता था,फिर हर व्यक्ति विद्रोह एवं अवहेलना से इसी तरह बचता जैसे आग से बचता है,और परोपकार करने के लिए हर एक इसी प्रकार रूचि दिखाता एवं तैयार रहता जिस प्रकार दुनिया में ऐश व आराम के उपायों में रुचि रखता है।

## परलोक पर ईमान का प्रभाव सांसारिक जीवन में:

राज्य के क़ानून,सभ्यता एवं संस्कृति का विकास,बुराई व भलाई का अहसास,और स्वाभाविक शालीनता भी इंसान को बुराईयों और अनैतिकताओं से बचाने वाली चीज़ें हैं, परन्तु ये चीजें इतनी असरदार एवं प्रभावशाली नहीं होतीं जितना मरणोपरांत प्रतिफल एवं दण्ड का विश्वास,और परलोक पर ईमान,बशर्ते कि विश्वास जीवंत एवं ईमान वास्तविक हो,महज़ नाम का ईमान और बेजान आस्था न हो।

अनुभव और दर्शन बताता है कि बुराईयों एवं अनैतिकताओं की गुंजाइश उसी समाज में होती है जो परलोक,मरने के बाद ईश्वर के समक्ष उपस्थिति,और प्रतिफल व दण्ड के विश्वास से ख़ाली हो; अन्यथा जिन लोगों के दिलों में ईमान व विश्वास की ज्योति मौजूद हो,उनका हाल तो यह होता है कि वे बुरे विचारों और बुरे प्रलोभनों से भी घबराते हैं,और अपने दिल को बुराई के विचारों से पवित्र रखना आवश्यक समझते हैं।

जो लोग दुनिया के इतिहास का ज़रा भी बोध रखते हैं वे जानते हैं कि इस दुनिया में सबसे पवित्र, शालीन और सभ्य व भाग्यशाली जीवन ईश्वर के उन्हीं बन्दों का रहा है जो मरणोपरांत की उपस्थिति और परलोक के प्रतिफल व दण्ड में विश्वास रखते हैं,और इसका कारण यह है कि ये विश्वास व्यक्ति को बुराई के इरादे से वहां भी रोकता है जहां कोई देखने वाला न हो और दुनिया में किसी पकड़ और कानूनी सज़ा का ख़तरा न हो।

कुल मिलाकर! इस दुनिया की समाप्ति के बाद परलोक का अस्तित्व,अल्लाह के पैग़म्बरों और उसकी किताबों की बताई हुई एक वास्तविकता एवं हक़ीक़त भी है,हमारी बुद्धिमत्ता का तक़ाज़ा भी है और इस पर ईमान व आस्था हमारा एक बहुत बड़ा हित भी।

❋ ❋ ❋ ❋ ❋

# तक़दीर (भाग्य) पर ईमान

हर अच्छी एवं बुरी बात व चीज़ के लिए ईश्वरीय ज्ञान में एक निर्धारित आकलन है,और हर चीज़ की रचना से पहले ईश्वर उसे जानता है, ईश्वर के इसी ज्ञान एवं आकलन को भाग्य या तक़्दीर कहते हैं,और कोई भी अच्छी एवं बुरी बात ईश्वर के ज्ञान एवं आकलन से बाहर नहीं।

भाग्य पर ईमान का अर्थ यह है कि इस बात पर विश्वास किया जाये और माना जाये कि दुनिया में जो कुछ हो रहा है,चाहे वह भला हो या बुरा वह सब अल्लाह के आदेश और उसकी इच्छा से हो रहा है,जिसको वह पहले ही तय कर चुका है,ऐसा नहीं है कि वह तो कुछ और चाहता हो और दुनिया का यह तंत्र उसकी इच्छा के विपरीत और उसकी सहमति के विरुद्ध चल रहा हो,ऐसा मानने से ईश्वर अत्यधिक असमर्थ एवं अयोग्य सिद्ध होगा।

ईश्वरीय वाणी है:

﴿الَّذِي خَلَقَ فَسَوَّى ۝٢ وَالَّذِي قَدَّرَ فَهَدَى ۝٣﴾ [الأعلى: 2-3]

*अनुवादः "जिसने हर (चीज़ को) बनाया फिर उसको ठीक बनाया,और जिसने पूर्व-निर्धारन किया,फिर मार्गदर्शन किया"।*

दूसरे स्थान पर अल्लाह कहता है:

﴿وَخَلَقَ كُلَّ شَيْءٍ فَقَدَّرَهُ تَقْدِيرًا ۝٢﴾ [الفرقان: 2]

*अनुवादः "और जिसने (संभावितों में से) हर (जीवित)चीज़ को पैदा किया,फिर सब का अलग-अलग आकलन किया"।*

﴿وَكُلُّ شَيْءٍ عِنْدَهُ بِمِقْدَارٍ ۝٨﴾ [الرعد: 8]

*अनुवादः "और हर चीज़ अल्लाह के नज़दीक एक विशेष आकलन से (पूर्व-निर्धारित) है"।*

एक और स्थान पर है:

﴿إِنَّا كُلَّ شَيْءٍ خَلَقْنَاهُ بِقَدَرٍ ﴿٤٩﴾﴾ [القمر: 49]

*अनुवाद:"हमने हर चीज़ को एक आकलन के साथ पैदा किया"।*

कहीं इस प्रकार है:

﴿قَدْ جَعَلَ اللَّهُ لِكُلِّ شَيْءٍ قَدْرًا ﴿٣﴾﴾ [الطلاق: 3]

*अनुवाद: "अल्लाह ने हर चीज़ का एक पूर्व-निर्धारित आकलन(अपने ज्ञान में) कर रखा है"।*

और यह भी:

﴿مَا أَصَابَ مِنْ مُصِيبَةٍ إِلَّا بِإِذْنِ اللَّهِ﴾ [التغابن: 11]

*अनुवाद: "कोई विपत्ति अल्लाह के आदेश के बग़ैर नहीं आती"।*

एक स्थान पर विस्तारपूर्वक कहा है:

﴿وَمَا تَحْمِلُ مِنْ أُنْثَىٰ وَلَا تَضَعُ إِلَّا بِعِلْمِهِ ۚ وَمَا يُعَمَّرُ مِنْ مُعَمَّرٍ وَلَا يُنْقَصُ مِنْ عُمُرِهِ إِلَّا فِي كِتَابٍ ۚ إِنَّ ذَٰلِكَ عَلَى اللَّهِ يَسِيرٌ ﴿١١﴾﴾ [فاطر: 11]

*अनुवाद: "और किसी औरत का न तो गर्भ रहता है,और न ही वह जन्म देती है,मगर सब उसकी जानकारी में होता है,और (इसी प्रकार) न किसी की आयु अधिक(निर्धारित) की जाती है,और न किसी की आयु कम(निर्धारित)की जाती है, मगर यह सब सुरक्षित पट्टिका (लौहे महफ़ूज़) में होता है,यह सब अल्लाह के लिए सरल है"।*

## टिप्पणी:

इस आस्था से तात्पर्य यह है कि हम को जो सफ़लता मिलती है,वह हमारे प्रयासों का प्रत्यक्ष परिणाम नहीं है; बल्कि वह अल्लाह तआला की कृपादृष्टि का परिणाम है इसलिए इस पर हमारा गर्व अथवा घमंड़ करना

निराधार है,इसी प्रकार हम को जो असफ़लता मिलती है वह भी अल्लाह तआला की किसी नीति व योजना का परिणाम है,और हमारे कर्मों से पहले ही हमारे कर्मों के परिणाम उसी अंतर्यामी की जानकारी में निर्धारित हो चुके थे; इसलिए हमको मायूस नहीं होना चाहिए न ही निराश होना चाहिए, बलकि उसी उत्साह और सक्रियता के साथ नये सिरे से परिश्रम में व्यस्त हो जाना चाहिए।

इस विषय की पूर्ण व्याख्या सूरा हदीद में इन शब्दों में उल्लेखित है:

﴿مَا أَصَابَ مِنْ مُصِيبَةٍ فِي الْأَرْضِ وَلَا فِي أَنْفُسِكُمْ إِلَّا فِي كِتَابٍ مِنْ قَبْلِ أَنْ نَبْرَأَهَا إِنَّ ذَلِكَ عَلَى اللَّهِ يَسِيرٌ ﴿٢٢﴾ لِكَيْلَا تَأْسَوْا عَلَى مَا فَاتَكُمْ وَلَا تَفْرَحُوا بِمَا آتَاكُمْ وَاللَّهُ لَا يُحِبُّ كُلَّ مُخْتَالٍ فَخُورٍ ﴿٢٣﴾﴾ [الحديد: 22-23]

*अनुवादः "सम्पूर्ण पृथ्वी पर कोई विपत्ति नहीं आती है, और न तुम्हारी जानों पर, परन्तु (वह) एक किताब में लिखी हुई है, इससे पूर्व कि हम उन चीज़ों को पैदा करें(दुनिया में) यह अल्लाह के लिए सरल है (यह बात इसलिए बतला दी है) ताकि जो चीज़ तुमसे जाती रहे तुम उस पर निराश न हो, और ताकि जो चीज़ तुमको प्रदान की जा रही है उस पर इतराओं नहीं, और अल्लाह किसी इतराने वाले घमंडी को पसन्द नहीं करता"।*

## कुल मिलाकर!

हर चीज़ में अल्लाह ने जो आकलन पूर्व-निर्धारित किया है वह वही चीज़ है जिसको लोग प्रकृति का नियम कहते हैं और जिस पर दुनिया चल रही है,इसी प्रकार अल्लाह ताला ने ब्रह्माण्ड के हर भाग एवं हर पहलू से संबंधित अपने दिशा-निर्देश निर्धारित कर दिये हैं, जिनका पालन करना उसके लिए अनिवार्य है, इसी प्रकार इंसानों के विकास-विनाश, जीवन-मृत्यु, रोग-स्वास्थ्य, दौलत-ग़रीबी, सुख-दुख, सौभाग्य-दुर्भाग्य आदि हर एक के सिद्धांत एवं नियम निर्धारित कर दिये हैं; अतः हम जो भी सुख-दुख का सामना करते हैं वह ईश्वर के ज्ञान एवं अनुमति से होता है।

## टिप्पणी:

हर ईमान वाले के लिए इस बात पर विश्वास करना आवश्यक है कि ब्रह्मांड की व्यवस्था चाहे वो अच्छी हो या बुरी,अर्थात बन्दों के हित मे वह कार्य जो हो रहा है अच्छा हो या बुरा,वह अल्लाह के सटीक अनुमानों और पूर्व-निर्धारित आकलनों के साथ है, इसके अतिरिक्त यह अनुमान गड़बड़,अर्थात आगे पीछे नहीं होते,कुछ इनमें से इंसानों के लिए लाभदायक एवं उपयोगी होते हैं, उदाहरणतः खाने-पीने,सुख-संतोष, स्वास्थ आदि का पूर्व-निर्धारण,और कुछ आकलन इन्सानों के लिए हानिकारक होते हैं, उदाहरणतः भूख-प्यास,थकान,भय रोग इत्यादि,इन सभी अच्छे-बुरे तथ्यों पर विश्वास व ईमान लाना अनिवार्य है।

अतः हम ईमान लाते हैं अल्लाह की (ओर से) भाग्य पर,अर्थात दुनिया में जो कुछ भी होता है अल्लाह के करने से होता है,और वही होता है जो अल्लाह ने दुनिया को बनाने से पहले ही निर्धारित कर दिया था,और इंसानों को परलोक में जो जन्नत व दोज़ख़ के रूप में प्रतिफल व दण्ड मिलेगा वह उनके कर्मों एवं प्रयासों का परिणाम होगा।

❋ ❋ ❋ ❋ ❋

❋ ❋ ❋

# परलोक के अद्भुत दृश्य

चूंकि परलोक की चीज़ें हमारी देखी-भाली नहीं हैं और न ही हमने कभी उनका अनुभव या अवलोकन किया है, इसलिए वे हमें अचंभे की सी लगती हैं,और उनका समझना कुछ लोगों के लिए कठिन होता है, लेकिन यह बिल्कुल ऐसा ही है जैसा कि किसी बच्चे से जो अभी अपनी मां के पेट में ही हो,अगर किसी उपकरण द्वारा यह कहा जाये कि ऐ बच्चे! तू अतिशीघ्र एक ऐसी दुनिया में आने वाला है जहां लाखों मील की ज़मीन है और उससे भी विशाल समुद्र एवं आसमान हैं, चांद, सूरज और सितारे हैं, वहां हवाई जहाज़ उड़ते हैं रेलगाड़ियां चलती और दौड़ती हैं, लड़ाईयां ऐसी होती हैं कि जिनमें तोपें गरजती हैं और एटम बम फटते हैं,तो वह बच्चा अगर किसी प्रकार इन बातों को समझ भी ले तो उसके लिए इन बातों पर विश्वास करना बहुत कठिन होगा,क्योंकि वह जिस दुनिया में है और जिसको देखता है वह तो केवल उसकी मां के पेट की मुट्ठी भर दुनिया है।

बिल्कुल ऐसा ही मामला परलोक के बारे में इस दुनिया के इंसानों का है, वस्तुस्थिति यह है कि परलोक इस दुनिया की तुलना में इसी प्रकार अत्यधिक विस्तृत और अत्यन्त विकसित होगा जिस प्रकार मां के पेट की तुलना में हमारी ये ज़मीन और आसमान वाली दुनिया अत्यधिक विस्तृत और विकसित है,जिस प्रकार बच्चा मां के पेट से इस दुनिया में आने के बाद वह सबकुछ देख लेता है, जिसको वह मां के पेट में रहने की अवधि में समझ नहीं सकता था,इसी प्रकार परलोक में पहुंचकर सभी इंसान वह सबकुछ देख लेंगे जो अल्लाह के पैगम्बरों और अल्लाह की किताबों ने वहां के बारे में बतलाया है।

कुल मिलाकर नबियों के माध्यम से परलोक से संबंधित जो भी विवरण मिला है,वह सब विश्वसनीय और सत्य है,और उनमें से कोई भी चीज़ नामुमकिन अथवा असंभव नहीं है।

# परलोक के चरण अथवा क़यामत के अद्भुत दृश्य

## परलोक का प्रथम चरण बरज़ख़ (बाधा):

मरने के बाद इंसान जिस लोक एवं जिस दुनिया में पहुंचता है उसे बरज़ख़ (बाधा) कहते हैं,चाहे इंसान को मिट्टी में दफ़न कर दिया जाये अथवा आग में जला दिया जाये या दरिया व समुद्र में फेंक दिया जाये,उसकी आत्मा बरज़ख़ की दुनिया में होती है,पवित्र हदीसों में इसी बरज़ख़ की दुनिया को क़ब्र कहा गया है, इस लोक में आत्मा को उसके पुण्य या पापी होने के ऐतबार से सुख या दुख का सामना करना होता है; जैसा कि आयतों एवं हदीसों से सिद्ध होता है।

बरज़ख़ और क़ब्र के प्रतिफल एवं यातना पर ईमान लाने का अर्थ ये है कि मरने के बाद से पुनरुत्थान तक के जीवन को सत्य माना जाये,और इसकी पुष्टि की जाये कि इंसान जिस प्रकार दुनिया में जीवन व्यतीत करके मरता है उसी के अनुसार परिस्थितियों का क़ब्र में सामना करना पड़ता है। परोपकार एवं पुण्य में जीवन व्यतीत किया तो सुख एवं ऐश्वर्य को भोगता है,और अगर पाप एवं बुराई के साथ सांसारिक जीवन व्यतीत किया तो यातनाओं का सामना करना पड़ता है।

## बरज़ख की दुनिया का नज़ारा रसूलुल्ललाह सल्लल्लाहु अलयहि वसल्लम की हदीस में:

पवित्र हदीस में है कि हज़रत बराअ बिन आज़िब रज़ीअल्लाहु अन्हु, अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलयहि वसल्लम से बयान करते है कि आप सल्लल्लाहु अलयहि वसल्लम ने(मुर्दे से सवाल-जवाब,बरज़ख़ अर्थात क़ब्र

के प्रतिफल व यातना का विवरण देते हुए) फ़रमाया:(जब मोमिन बन्दा दुनिया से स्थानांतरित होकर क़ब्र में जाता है तो) उसके पास अल्लाह के दो फ़रिश्ते आकर उसको बैठाते हैं,फिर उससे पूछते हैं: "مَن رَبُّك؟" तेरा मालिक कौन है? वह कहता है "ربِّيَ الله" मेरा मालिक अल्लाह है।फिर पूछते हैं: "مادِينُك؟" तेरा धर्म क्या है? वह कहता है, "دِيني الإسلامُ" मेरा धर्म इस्लाम है। फिर पूछते हैं: "ماهذا الرَّجلُ الَّذي بُعِثَ فيكم؟" यह व्यक्ति जो तुममें नबी की हैसियत से भेजे गये थे, तुम्हारा इनके बारे में क्या विचार है? वह कहता है "هوَ رسولُ اللهِ" वह अल्लाह के सच्चे रसूल हैं। वे फ़रिश्ते कहते हैं: यह बात तुम्हें किसने बताई?वह बन्दा कहेगा: मैंने अल्लाह की किताब पढ़ी, ईमान लाया और मैंने उसकी पुष्टि की।

हज़रत रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलयहि वसल्लम फ़रमाते है कि मोमिन बन्दे का यही जवाब है जिसके संबंध में पवित्र क़ुरान में अल्लाह तआला ने कहा है:

﴿يُثَبِّتُ اللَّهُ الَّذِينَ آمَنُوا بِالْقَوْلِ الثَّابِتِ فِي الْحَيَاةِ الدُّنْيَا وَفِي الْآخِرَةِ﴾ [إبراهيم: 27]

*अनुवाद: "अल्लाह तआला ईमान वालों को सच्ची पक्की बात की कृपा से दुनिया एवं परलोक में टिकाये रखेगा"।*

अर्थात वे गुमराही से एवं उसके कारण आने वाली विपत्ति से सुरक्षित रखे जायेंगे।

इसके बाद अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलयहि वसल्लम ने फ़रमाया:"जब मोमिन बन्दा फ़रिश्तों के सवालों के जवाब ठीक ठीक दे देता है,तो एक सदा देने वाला आसमान से सदा देता है कि मेरे बन्दे ने ठीक बात कही,और सही सही जवाब दिये;अतः इसके लिए जन्नत का फ़र्श बिछाओ,जन्नत के वस्त्र पहनाओ,और जन्नत की ओर इसके लिए एक दरवाज़ा खोल दो; तो वह दरवाज़ा खोल दिया जाता है,उससे जन्नत की सुगंधित हवाएं और खुशबुएं आती हैं,जहां तक उसकी नज़र जाती है क़ब्र

उसके लिए फैला दी जाती है। इसके बाद ईमान न लाने वाले का वर्णन आप सल्लल्लाहु अलयहि वसल्लम ने किया,और फ़रमाया:(मरने के बाद);उसकी आत्मा उसके शरीर में लौटा दी जाती है,उसके पास भी दो फ़रिश्ते आते हैं,उसको बैठाकर उससे भी पूछते हैं: "مَن رَبُّكَ؟" वह कहता है:हाय हाय मैं नहीं जानता,फिर फ़रिश्ते पूछते हैं:"مَا دِينُكَ؟" वह कहता है: हाय हाय मैं कुछ नहीं जानता,फिर फ़रिश्ते पूछते हैं:ये सज्जन जो तुममें भेजे गये थे उनके बारे में तुम्हारा क्या विचार है?वह फिर यही कहता है: हा-हा "لا ندري" (मैं नहीं जानता) इसके बाद आसमान से एक सदा देने वाला सदा देता है, इसने झूठ कहा, फिर ईश्वरीय आदेश होता है कि इसके लिए जहन्नम का बिस्तर बिछाओ, दोज़ख़ के वस्त्र पहनाओ, और दोज़ख़ का दरवाज़ा खोल दो! हुज़ूर सल्लल्लाहु अलयहि वसल्लम फ़रमाते हैं: लगातार दोज़ख़ की गर्मी, लपटें और झुलसाने वाली हवाएं उसके पास आती रहेंगी, उसकी क़ब्र उस पर अत्यन्त ही संकरी कर दी जायेगी, जिसके कारण उसके सीने की पसलियां इधर से उधर हो जायेंगी।

फिर उसको यातनाएं देने के लिए एक ऐसे फ़रिश्ते के नियंत्रण में दे दिया जायेगा जो न कुछ देखेगा, न सुनेगा,उसके पास लोहे की मुंगरी होगी, ऐसी मुंगरी कि अगर उससे किसी पहाड़ पर चोट की जाये तो वह भी मिट्टी का ढेर हो जाये,वह फ़रिश्ता उस मुंगरी से उस काफ़िर इंसान को ऐसी चोट लगायेगा, जिससे वह इस प्रकार चीख़ेगा,जिसको जिनों एवं इंसानों के अलावा वे सब चीज़ें सुनेंगी, जो पूर्व व पश्चिम के बीच हैं, उस चोट से वह मिट्टी हो जायेगा, इसके बाद उसके अंदर आत्मा डालकर जीवित किया जायेगा।

(मुस्नद अहमद, अबू दाऊद, हवाला : मआरिफ़ुल हदीस:पुस्तक /1 पृष्ठ 123-125)

क़ुरान में मुनाफ़िक़ों (निष्ठाहीन पाखंडियों) के संबंध में अल्लाह तआला ने कहा है:

﴿سَنُعَذِّبُهُمْ مَرَّتَيْنِ ثُمَّ يُرَدُّونَ إِلَى عَذَابٍ عَظِيمٍ﴾ [التوبة: 101]

*अनुवाद: "हम उनको दो बार यातनाएं देंगे,फिर वे बड़ी यातना की ओर लौटाए जायेंगे"।*

दूसरे स्थान पर फ़िरऔन एवं उसके समूह के संबंध में कहा गया:

﴿وَحَاقَ بِآلِ فِرْعَوْنَ سُوءُ الْعَذَابِ ۝ النَّارُ يُعْرَضُونَ عَلَيْهَا غُدُوًّا وَعَشِيًّا وَيَوْمَ تَقُومُ السَّاعَةُ أَدْخِلُوا آلَ فِرْعَوْنَ أَشَدَّ الْعَذَابِ﴾ [غافر: 45-46]

*अनुवाद: "फ़िरऔन वालों पर बुरी तरह विपत्ति आ पड़ी,वे लोग सुबह-शाम अग्नि के समक्ष लाये जाते हैं,और जिस दिन क़यामत की घड़ी खड़ी होगी(सदा आयेगी कि) फ़िरऔन वालों को पहले से भी बढ़कर यातनाएं दो"।*

## टिप्पणी:

बरज़ख़ और क़ब्र से तात्पर्य वह ज़मीन का गड्ढा नहीं है,जिसको क़ब्र कहा जाता है, बल्कि वह लोक है जिसमें इन सभी परिस्थितियों एवं दृश्यों का सामना करना पड़ता है,इसको बरज़ख़ की दुनिया कहा जाता है,इस लोक में जो सुख-दुख होता है, उससे आत्मा ही प्रभावित होती है,क्योंकि किसी भी कार्य की वास्तविक ज़िम्मेदार आत्मा ही होती है,न कि मिट्टी का शरीर। ईश्वरीय वाणी है:

﴿كُلُّ نَفْسٍ بِمَا كَسَبَتْ رَهِينَةٌ﴾ [المدثر: 38]

*अनुवाद: "हर आत्मा एवं जान अपने कार्यों से बंधी हुई है"।*

❋ ❋ ❋ ❋ ❋

❋ ❋ ❋

# परलोक का दूसरा चरण; पुर्नजीवन अथवा मृत्यु के बाद दोबारा उठना

हज़रत अब्दुल्लाह बिन अम्र रज़ीअल्लाहु अन्हु बयान करते हैं कि अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलयहि वसल्लम ने एक लंबी हदीस में क़यामत की विभिन्न निशानियों, दज्जाल का निकलना आदि का वर्णन करने के बाद क़यामत के संबंध में फ़रमाया :

"ثُمَّ يُنْفَخُ فِيهِ أُخْرَى فَإِذَا هُمْ قِيَامٌ يَنْظُرُونَ ثُمَّ يُقَالُ يَا أَيُّهَا النَّاسُ هَلُمَّ إِلَى رَبِّكُمْ وَقِفُوهُمْ إِنَّهُمْ مَسْئُولُونَ" [صحيح مسلم: 2940]

*अनुवादः "फिर दूसरी बार बिगुल में फूंक मारी जायेगी,तो यकायक सब के सब खड़े होके देखते होंगे,फिर कहा जायेगा कि ऐ लोगो! एक मालिक और एक मालिक की ओर चलो!(और फ़रिश्तों को आदेश होगा) इन्हें (हिसाब के मैदान में) खड़ा करो,इन से सवाल किये जायेंगे (इनके कर्मों का हिसाब किताब होगा)"।*

दुनिया में जब पाप अधिक होने लगेंगे,लोग अपने माता-पिता की अवहेलना और उनके साथ कठोर व्यवहार करने लगेंगे,अमानत में दग़ाबाज़ी होने लगेगी, गाना-बजाना एवं नाच आदि मनोरंजन एवं खेलकूद अत्यधिक हो जायेंगे, लोग पूर्वजों एवं महापुरुषों को बुरा कहने लगेंगे, अज्ञानी एवं कम शिक्षित लोग लीडर और मुखिया बन जायेंगे,चरवाहे आदि कम दर्जे के लोग ऊंची-ऊंची इमारतें बनाने लगेंगे, और अक्षम एवं अयोग्य लोगों को पद एवं ओहदे मिलने लगेंगे, तो ईश्वरीय आदेश पर इस्राफील अलयहिस्सलाम (क़यामत का) बिगुल फूंकेंगे,जिससे सब चीज़ें नष्ट हो जायेंगी, फिर चालीस साल बाद दोबारा

ईश्वरीय आदेश पर हज़रत इस्राफ़ील अलयहिस्सलाम बिगुल फूंकेंगे, तो सब चीज़ें प्रकट हो जायेंगी,इंसान भी जीवित हो उठेंगे, एकत्र होने के मैदान में सभी ईश्वर के समक्ष प्रस्तुत किये जायेंगे, कर्मों का हिसाब लिया जायेगा,पाप और पुण्य का बदला दिया जायेगा,जिस दिन ये सारे काम होंगे उस दिन को "यौमुल हश्र"(एकत्र किये जाने का दिन) "यौमुल जज़ा"और "यौमुद्दीन"(बदले का दिन) और "यौमुल हिसाब"(हिसाब का दिन) कहते हैं।

## टिप्पणी:

मृत्यु के समय इंसान के शरीर से आत्मा और जान का संबंध समाप्त हो जाता है,और बरज़ख़ या क़ब्र में इंसानों को आध्यात्मिक जीवन ही नसीब होता है,शरीर तो मिट्टी में मिल जाता है; परन्तु क़यामत में जब दोबारा जीवन प्राप्त होगा तो आत्मा एवं शरीर दोनों को ही जीवन मिलेगा,और आत्मा का संबंध शरीर से स्थापित कर दिया जायेगा,इसी कारण इसको शारिरिक जीवन और शारीरिक पुनरुत्थान कहा जाता है,काफ़िर और मुश्रिक (बहुशवरवादी) इसी शारिरिक जीवन को बुद्धिमत्ता से परे और आश्चर्यजनक मानते थे। क़ुरान कहता है:

﴿قَالَ مَنْ يُحْيِي الْعِظَامَ وَهِيَ رَمِيمٌ ۝٧٨ قُلْ يُحْيِيهَا الَّذِي أَنْشَأَهَا أَوَّلَ مَرَّةٍ﴾ [يس: 78-79]

*अनुवादः "बोला:इन सड़ी खोखली हड्डियों को कौन जीवित करेगा,कह दीजिए वहीं जिसने पहली बार इनको पैदा किया"।*

दूसरे स्थान पर है:

﴿بَلْ هُمْ فِي لَبْسٍ مِنْ خَلْقٍ جَدِيدٍ﴾ [ق: 15]

*अनुवादः "बल्कि ये लोग नई सृष्टि के बारे में आशंकित हैं"*

तीसरे स्थान पर ईश्वर कहता है:

﴿أَإِنَّا لَمَبْعُوثُونَ خَلْقًا جَدِيدًا﴾ [الإسراء: 49]

*अनुवादः "क्या हम सचमुच नई सृष्टि के रूप में उठाए जाएंगे?"*

चौथे स्थान पर है:

﴿كَمَا بَدَأْنَا أَوَّلَ خَلْقٍ نُعِيدُهُ﴾ [الأنبياء: 104]

*अनुवादः "जिस प्रकार हमने पहली सृष्टि की शुरुआत की,इसी प्रकार हम उसको दोबारा बनायेंगे"।*

❋ ❋ ❋ ❋ ❋

❋ ❋ ❋

# परलोक की तीसरा चरण; कर्म-पत्र और कर्मों की प्रस्तुति

अल्लाह् तआला ने इस दुनिया को परीक्षा एवं आज़माइश का घर बनाया है,और उद्देश्य इंसानों को दुनिया में भेजकर उनकी परीक्षा लेना है,कि वे अपने मन एवं शैतान से बचकर अपने बनाने वाले,एवं मालिक के बताए मार्ग पर चलते हैं,और सफ़ल होते हैं, अथवा मन और शैतान के जाल में फंसकर परास्त एवं असफ़ल होते हैं,इस परीक्षा के लिए यद्दपि ईश्वरीय ज्ञान पर्याप्त था और अल्लाह् तआला अपने सम्पूर्ण ज्ञान ही के बल पर प्रतिफल व दण्ड दे सकते थे; लेकिन परमेश्वर ने सांसारिक अदालतों और न्यायालयों के सिद्धांतों के अनुरूप गवाह् और दस्तावेज़ आदि की भी व्यवस्था की है; अतः विभिन्न चीज़ें इंसानों के विरूद्ध गवाही देंगी। जैसे स्वयं इंसान के शारिरिक अंग, धरती और फ़रिशते आदि,इसी प्रकार ब्रह्मांड के रचयिता और सर्वोच्च न्यायधीश ने कर्मों को लिखने और दस्तावेज़ तैयार करने के लिए हर इंसान के साथ फ़रिश्तों को नियुक्त किया है,जो इंसान के प्रत्येक कर्म एवं शब्द को दर्ज करते हैं,और इसी दस्तावेज़ और फ़ाइल को कर्म-पत्र कहा जाता है, विभिन्न आयतों में इसको स्पष्ट किया गया है।

(1)- ﴿وَوُضِعَ الْكِتَابُ فَتَرَى الْمُجْرِمِينَ مُشْفِقِينَ مِمَّا فِيهِ وَيَقُولُونَ يَا وَيْلَتَنَا مَالِ هَذَا الْكِتَابِ لَا يُغَادِرُ صَغِيرَةً وَلَا كَبِيرَةً إِلَّا أَحْصَاهَا وَوَجَدُوا مَا عَمِلُوا حَاضِرًا وَلَا يَظْلِمُ رَبُّكَ أَحَدًا﴿٤٩﴾﴾ [الكهف: 49]

*अनुवाद: "और कर्म-पत्र रख दिया जायेगा, फिर तू अपराधियों को देखेगा उससे डर रहे हैं जो कुछ उसमें लिखा है,और कह रहे हैं: हमारा दुर्भाग्य इस*

*कर्म-पत्र की तो अजीब स्थिति है,कि इसने लिखे बग़ैर न कोई छोटा गुनाह छोड़ा और न बड़ा,और उन्होंने जो कुछ भी किया था उसे लिखा हुआ मौजूद पायेंगे,और तेरा मालिक किसी पर अत्याचार नहीं करता"।*

(2)- ﴿إِنَّ رُسُلَنَا يَكْتُبُونَ مَا تَمْكُرُونَ﴾ [يونس: 21]

*अनुवादः "निःसंदेह हमारे संदेशवाहक तुम्हारी चालों को समझते हैं"।*

(3)- ﴿إِذْ يَتَلَقَّى الْمُتَلَقِّيَانِ عَنِ الْيَمِينِ وَعَنِ الشِّمَالِ قَعِيدٌ ۝ مَا يَلْفِظُ مِنْ قَوْلٍ إِلَّا لَدَيْهِ رَقِيبٌ عَتِيدٌ﴾ [ق: 17-18]

*अनुवादः "जब दो लेने वाले दायें और बायें बैठे हुए लेते जाते हैं,कोई बात वह नहीं बोलता मगर एक निरीक्षक उसके पास उपस्थित रहता है"।*

(4)- ﴿وَإِنَّ عَلَيْكُمْ لَحَافِظِينَ ۝ كِرَامًا كَاتِبِينَ ۝ يَعْلَمُونَ مَا تَفْعَلُونَ﴾ [الانفطار: 10-12]

*अनुवादः "निःसंदेह तुम्हारे ऊपर सुरक्षा करने वाले नियुक्त हैं,जो सम्माननीय लिखने वाले हैं,जो तुम करते हो सब जानते हैं"।*

कुल मिलाकर! दुनिया में इंसान जो भी अच्छाई या बुराई, कर्म या शब्द बोलता और करता है,उसको फ़रिश्ते अपनी फ़ाइलों में दर्ज कर लेते हैं,दायीं ओर वाला फ़रिशता पुण्य दर्ज करने के लिए नियुक्त हैं,और बाईं ओर वाला फ़रिशता पाप दर्ज करने के लिए नियुक्त हैं,इस प्रकार इंसान के सम्पूर्ण जीवन का लेखा-जोखा दर्ज हो जाता है,और मरने के बाद इन कर्म-पत्रों को उन आत्माओं के स्थान "इल्लिय्यीन"(सातवें आसमान के ऊपर एक स्थान) या "सिज्जीन" (पृथ्वी के गर्भ में एक स्थान का नाम) सील लगाकर मुहरबंद करके सुरक्षित रख दिया जाता है,और क़यामत के दिन अच्छे लोगों को सामने से दायें हाथ में और बुरे लोगों को पीठ के पीछे से बातें हाथ में ये कर्म-पत्र दिये जायेंगे।

ईश्वरीय वाणी है:

﴿فَأَمَّا مَنْ أُوتِيَ كِتَابَهُ بِيَمِينِهِ ۝٧ فَسَوْفَ يُحَاسَبُ حِسَابًا يَسِيرًا ۝٨﴾ [الانشقاق: 7-8]

*अनुवाद: "फिर जिस व्यक्ति को उसका कर्म-पत्र दायें हाथ में दिया जायेगा उससे आसान हिसाब लिया जायेगा"।*

﴿وَأَمَّا مَنْ أُوتِيَ كِتَابَهُ وَرَاءَ ظَهْرِهِ ۝١٠ فَسَوْفَ يَدْعُو ثُبُورًا ۝١١ وَيَصْلَى سَعِيرًا ۝١٢﴾ [الانشقاق: 10-12]

*अनुवाद: "और जिस व्यक्ति को उसका कर्म-पत्र उसकी पीठ पीछे से दिया जायेगा तो वह मौत को पुकारेगा और दोज़ख़ में दाख़िल होगा"।*

﴿فَأَمَّا مَنْ أُوتِيَ كِتَابَهُ بِيَمِينِهِ فَيَقُولُ هَاؤُمُ اقْرَءُوا كِتَابِيَهْ ۝١٩﴾ [الحاقة: 19]

*अनुवाद: "फिर जिस व्यक्ति को उसका कर्म-पत्र दायें हाथ में मिलेगा तो वह(प्रसन्नता से) कहेगा,लो मेरा कर्म-पत्र पढ़ो"।*

﴿وَأَمَّا مَنْ أُوتِيَ كِتَابَهُ بِشِمَالِهِ فَيَقُولُ يَا لَيْتَنِي لَمْ أُوتَ كِتَابِيَهْ ۝٢٥﴾ [الحاقة: 25]

*अनुवाद: और जिस व्यक्ति को उसका कर्म-पत्र उसके बायें हाथ में दिया जायेगा तो वह कहेगा: काश मुझे मेरा कर्म-पत्र दिया ही नहीं जाता"।*

संक्षिप्त यह कि सभी ईमान वालों का इस पर ईमान एवं विश्वास होना चाहिए कि कल क़यामत के दिन अल्लाह के समक्ष जब हम खड़े होंगे तो हमारे कर्म-पत्र भी प्रस्तुत किये जायेंगे,और हर छोटे-बड़े कर्म का हिसाब देना होगा, जिसको अल्लाह ने अपनी किताब में विभिन्न स्थानों पर बयान किया है।

(1)- ﴿وَأَمَّا مَنْ خَافَ مَقَامَ رَبِّهِ وَنَهَى النَّفْسَ عَنِ الْهَوَى ۝٤٠ فَإِنَّ الْجَنَّةَ هِيَ الْمَأْوَى ۝٤١﴾ [النازعات: 40-41]

*अनुवाद: "जो व्यक्ति अपने मालिक के समक्ष खड़ा होने से डरा होगा और उसने मन को इच्छाओं से रोका होगा तो उसका ठिकाना जन्नत होगी"।*

(2)- ﴿وَلِمَنْ خَافَ مَقَامَ رَبِّهِ جَنَّتَانِ ۝٤٦﴾ [الرحمن: 46]

*अनुवादः"और उस व्यक्ति के लिए जो अपने मालिक के समक्ष खड़ा होने से डरा होगा, दो जन्नत होंगी"।*

(3)- ﴿يَوْمَ يَقُومُ النَّاسُ لِرَبِّ الْعَالَمِينَ۝﴾ [المطففين: 6]

*अनुवादः "जिस दिन लोग समस्त दुनियाओं के मालिक के समक्ष (हिसाब-किताब के लिए) खड़े होंगे"।*

अतः हम क़यामत के दिन पर ईमान एवं विश्वास करने के साथ-साथ कर्मों को सुरक्षित रखे जाने और क़यामत में उनका हिसाब-किताब होने पर भी ईमान रखते हैं।

❋ ❋ ❋ ❋ ❋

❋ ❋ ❋

# परलोक का चौथा चरण; न्याय का तराज़ू

क़यामत और एकत्रित होने के मैदान में ईश्वर के दरबार के अन्दर न्याय और इंसाफ़ किया जायेगा,और किसी पर लेशमात्र भी ज़ुल्म नहीं किया जायेगा; अच्छे-बुरे कर्मों को नापने और तौलने के लिए अल्लाह तआला एक न्याय का तराज़ू स्थापित करेंगे, और सभी लोगों के साथ इंसाफ़ होगा। सूरा नबा में कहा गया है ﴿جَزَاءً وِفَاقًا﴾ अर्थात इंसानों को इंसाफ़ के साथ पूरा-पूरा बदला मिलेगा, इसी समानता और न्याय व इंसाफ़ को एकत्रित होने के मैदान में लोगों के सामने क़ायम करने के लिए तराज़ू रखी जाएगी, हुर व्यक्ति के कार्य का वज़न उसके समाने होगा किसी के लिए किसी संदेह की कोई गुंजाइश ना होगी।

﴿وَنَضَعُ الْمَوَازِينَ الْقِسْطَ لِيَوْمِ الْقِيَامَةِ فَلَا تُظْلَمُ نَفْسٌ شَيْئًا وَإِنْ كَانَ مِثْقَالَ حَبَّةٍ مِنْ خَرْدَلٍ أَتَيْنَا بِهَا وَكَفَى بِنَا حَاسِبِينَ۝٤٧﴾ [الأنبياء: 47]

*अनुवाद: "और हम क़यामत के दिन न्याय का तराज़ू स्थापित करेंगे,फिर किसी पर लेशमात्र भी ज़ुल्म नहीं होगा,अगर राई के दाने के बराबर भी किसी ने कोई कर्म किया होगा तो हम उसे भी लाकर प्रस्तुत कर देंगे,और हिसाब लेने के लिए हम ही पर्याप्त हैं"।*

﴿فَأَمَّا مَنْ ثَقُلَتْ مَوَازِينُهُ۝٦ فَهُوَ فِي عِيشَةٍ رَاضِيَةٍ۝٧ وَأَمَّا مَنْ خَفَّتْ مَوَازِينُهُ۝٨ فَأُمُّهُ هَاوِيَةٌ۝٩﴾ [القارعة: 6-9]

*अनुवाद: "अतः जिस की तौल भारी हुई तो वह प्रसन्नचित ऐश में होगा,और जिसकी तौल हल्की हुई तो उसका ठिकाना दोज़ख़ होगा"।*

﴿فَمَنْ ثَقُلَتْ مَوَازِينُهُ فَأُولَئِكَ هُمُ الْمُفْلِحُونَ۝٨ وَمَنْ خَفَّتْ مَوَازِينُهُ فَأُولَئِكَ الَّذِينَ خَسِرُوا أَنْفُسَهُمْ ۝٩﴾ [الأعراف: 8-9]

*अनुवाद: "फिर जिसका पलड़ा भारी होगा तो ऐसे ही लोग तो कामयाब होंगे,और जिसका पलड़ा हल्का होगा तो ये लोग वे होंगे जिन्होंने अपना नुक़्सान कर लिया है"।*

## टिप्पणी:

तौल और पलड़े के भारी और हल्का होने से तात्पर्य पुण्य कर्मों के वज़न की कमीबेशी है, उद्देश्य तराज़ू एवं तौल से भी वही है जो हिसाब और किताब से है, अर्थात क़यामत में लेशमात्र भी ज़ुल्म नहीं होगा; बल्कि छोटे से छोटा पुण्य भी किसी के खाते में होगा तो उसका भी बदला दिया जायेगा; हां गुनाहों के संबंध में ईश्वरीय सिद्धांत यह है कि कुफ़्र और शिर्क के अलावा वह अनंत कृपालु जिस गुनाह को चाहें क्षमा कर दें,और जिस गुनाह पर चाहें दण्ड दें, वह कृपा एवं न्याय दोनों का मालिक एवं सर्वशक्तिमान है, कोई उसे रोकने-टोकने वाला नहीं है; हां पुण्य कर्मों का बदला अवश्य मिलेगा; अतः ये संभव ही नहीं कि किसी पुण्य का बदला न दिया जाए, या किसी न किये हुए गुनाह का दण्ड दे दिया जाये (وَمَا رَبُّكَ بِظَلَّامٍ لِّلْعَبِيْدِ) (सूरा हामीम अस्सजदा:46)

*अनुवाद: "आपका मालिक बन्दों पर अत्याचार करने वाला नहीं है"।*

और ये भी कहा:

﴿مَا يُبَدَّلُ الْقَوْلُ لَدَيَّ وَمَا أَنَا بِظَلَّامٍ لِّلْعَبِيْدِ ﴿٢٩﴾﴾ [ق: 29]

*अनुवाद: "मेरे पास बात बदलती नहीं है,और मैं बन्दों पर अत्याचार करने वाला नहीं हूं"।*

कुल मिलाकर! हर मोमिन के लिए अनिवार्य है कि वह क़यामत के दिन न्याय एवं इंसाफ़ और प्रतिफल व दण्ड पर पूरा विश्वास रखे,और इसकी तैयारी करें अल्लाह ताला पुण्य कर्मों की तौफ़ीक़ दे।(सरल बनाए) आमीन

# परलोक का पांचवां चरण: प्रतिफल एवं दण्ड

जब इंसान के भौतिक कर्मों और कार्यों का परिणाम एवं प्रभाव अवश्य ज़ाहिर होता है और हर आंख इसको देखती है, अतः अगर उसके नैतिक और आध्यात्मिक कर्मों एवं कार्यों का कोई परिणाम और प्रभाव न हो तो ज़ाहिरी तौर पर कोई सद्बुद्धि व्यक्ति इसको स्वीकार नहीं करता; बल्कि फ़ितरत का तक़ाज़ा है और सद्बुद्धि की अपेक्षा है कि नैतिक एवं आध्यात्मिक कर्मों का परिणाम एवं प्रभाव भी अवश्य होना चाहिए; अतः इस सांसारिक जीवन के बाद कोई और ऐसा जीवन होना चाहिए जिसमें अच्छे या बुरे नैतिक एवं आध्यात्मिक कर्मों के प्रभाव,विशेषताएं और परिणाम ज़ाहिर हों,और इंसानों को उनके दुराचार और सदाचार का प्रतिफल और दण्ड मिले।

अच्छाई और पुण्य के बदले को सवाब और प्रतिफल कहा जाता है, जो जन्नत और उसकी नेमतों के रुप में दिया जायेगा,और बुराई व गुनाह के बदले को अज़ाब और यातना या दण्ड कहा जाता है,जो दोज़ख़ और उसकी विभिन्न यातनाओं के रूप में दिया जायेगा। क़ुरान ऐलान करता है:

﴿الْيَوْمَ تُجْزَوْنَ مَا كُنْتُمْ تَعْمَلُونَ﴾ [الجاثية: 28]

*अनुवादः " जो तुम करते थे आज वही बदला पाओगे"।*

दूसरे स्थान पर है:

﴿لِتُجْزَى كُلُّ نَفْسٍ بِمَا تَسْعَى﴾ [طه: 15]

*अनुवादः "ताकि हर जान को उसका बदला दिया जाये जो वह करती थी"*

कुल मिलाकर! हर ईमान वाले को इस बात में विश्वास और आस्था है कि आज जो कुछ कर रहे हैं कल उसके अंजाम से सामना होगा, अच्छाईयां करेंगे तो अंजाम भी अच्छा होगा, बुराईयां करेंगे तो अंजाम भी बुरा ही होगा। जैसी करनी वैसी भरनी; अतः परलोक की उपेक्षा एवं लापरवाही बड़ी हानिकारक है,इससे सदैव बचें,और अपने परलोक को बनाने के प्रयास और कोशिशें करते रहें।

❋ ❋ ❋ ❋ ❋

❋ ❋ ❋

❋ ❋

# परलोक का छठा चरण: पुल सिरात

अल्लाह् तआला ने जन्नत में जाने का मार्ग दोज़ख़ के ऊपर से गुज़ारकर बनाया है,इस पर से हर सदाचारी व दुराचारी,दोषी एवं निर्दोष, मोमिन एवं काफ़िर सबको गुजरना होगा उसी रास्ते को आम भाषा में "पुल सिरात"कहा जाता है। इसके ऊपर से गुज़रने के समय अल्लाह् तआला से डरने वाले मोमिन बन्दे अपने अपने दर्जे के अनुसार सही सलामत गुज़र जायेंगे,और गुनाहगार उलझकर दोज़ख़ में गिर पड़ेंगे,फिर कुछ अवधि के बाद अपने अपने कर्मोंनुसार; तथा माननीय नबियों,फ़रिश्तों और पुण्यात्माओं की सिफ़ारिश से और अन्त में प्रत्यक्ष अनंत कृपालु ईश्वर की कृपा से वे सभी गुनाहगार जिन्होंने सच्ची आस्था के साथ कलमा पढ़ा था दोज़ख़ से निकाले जायेंगे,केवल काफ़िर उसमें रह जायेंगे,और दोज़ख़ का दरवाज़ा बंद कर दिया जायेगा,इसी को अल्लाह् तआला ने बयान करते हुए कहा है:

﴿وَإِنْ مِنْكُمْ إِلَّا وَارِدُهَا كَانَ عَلَى رَبِّكَ حَتْمًا مَقْضِيًّا ۝٧١ ثُمَّ نُنَجِّي الَّذِينَ اتَّقَوْا وَنَذَرُ الظَّالِمِينَ فِيهَا جِثِيًّا ۝٧٢﴾ [مريم: 71-72]

*अनुवाद:"और तुममें से कोई भी ऐसा नहीं जिसका गुज़र उस पर से न हो।यह आपके मालिक पर अनिवार्य है जो पूरा होकर रहेगा,फिर उन्हें हम मुक्ति दे देंगे जो अल्लाह से डरते थे,और अत्याचारियों को उसी में पड़ा रहने देंगे घुटनों के बल गिरते हुए"।*

## टिप्पणी:

ईमान वालों के लिए आवश्यक एवं अनिवार्य है कि वे इसकी आस्था रखें और विश्वास करें फिर इस पर गुजरने को आसान बनाने के लिए सदैव तत्पर रहें; ताकि अल्लाह् तआला इस चरण को भी अधिक सरल बना दे।

# परलोक का सातवां चरण: सिफ़ारिश

क़यामत के मैदान और एकत्रित होने के दिन घटने वाली घटनाओं में एक सिफ़ारिश भी है,जिसकी स्पष्ट रूप से सूचना दी गयी है,और मोमिन के लिए उस पर ईमान लाना अनिवार्य है,ये सिफ़ारिश का हक़ हालांकि फ़रिश्तों पुण्यात्माओं आदि बहुतों को प्राप्त होगा; किन्तु अल्लाह के प्रियतम,नबियों के सरदार,ख़ुदा के रसूल हज़रत मुहम्मद मुस्तफ़ा सल्लल्लाहु अलयहि वसल्लम की सिफ़ारिश कई प्रकार की होगी,और निरन्तरता के साथ प्रमाणित हदीसों से ये सिद्ध हो चुका है। (1) जब हज़रत आदम अलयहिस्सलाम से लेकर हज़रत ईसा अलयहिस्सलाम तक समस्त महान पैग़बंर भी आत्मचिंतन की स्थिति में होंगे और अल्लाह के प्रभुत्व एवं प्रताप से समस्त प्राणी भयभीत होंगे, किसी को लब हिलाने का साहस न होगा, उस समय अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलयहि वसल्लम अत्यन्त विनम्रता एवं शिष्टाचार के साथ जो आपको शोभा देता है, परमेश्वर के दरबार में समस्त एकत्र लोगों के लिए सिफ़ारिश करेंगे कि हिसाब-किताब शुरू किया जाये, यही सिफ़ारिश "शफ़ाअत ए कुब्रा" (सबसे बड़ी सिफ़ारिश) कहलाती है। (2) मुहम्मद सल्लल्लाहु अलयहि वसल्लम के उम्मतियों (अनुयायियों) में से जो लोग अपने गुनाहों के कारण दोज़ख़ के हक़दार या उसमें प्रवेश कर चुके होंगे, उनके लिए सिफ़ारिश करके दोज़ख़ से मुक्ति दिलाएंगे, इस सिफ़ारिश से दोषी अनुयायियों की एक बहुत बड़ी संख्या जहन्नम से निकाली जायेगी। (3) अनुयायियों में से पुण्यात्माओं के लिए हिसाब के बग़ैर जन्नत में प्रवेश के लिए भी आप सिफ़ारिश करेंगे, जो स्वीकार की जायेगी, और उन्हें बग़ैर हिसाब जन्नत में प्रवेश करने की अनुमति होगी। (4) इसी प्रकार पुण्यात्माओं के दर्जों में उन्नति के लिए भी आप सल्लल्लाहु अलयहि वसल्लम सिफ़ारिश करेंगे।

फिर हदीसों से ये भी पता चलता है कि रसूलुल्ललाह सल्लल्लाहु अलयहि वसल्लम के लिए सिफ़ारिश का दरवाज़ा खुल जाने के बाद अन्य नबी अलयहिमुस्सलाम,यशस्वी फ़रिशतें,एवं अल्लाह के दूसरे धर्मनिष्ठ और घनिष्ठ बन्दें भी अपने से संबंधित ईमान वालों के हक़ में सिफ़ारिश

करेंगे,इसी प्रकार कुछ पुण्य कर्म भी उनके करने वालों के लिए सिफ़ारिश करेंगे,ये सिफ़ारिशें भी स्वीकार की जायेंगी; अंततः एक बहुत बड़ी संख्या ऐसे लोगों की होगी जिनकी मुक्ति एवं छुटकारा या जन्नत में ऊंचे मक़ाम पर पहुंचना इन्हीं सिफ़ारिशों की बदौलत होगा।

परन्तु ये ख़्याल रहे कि ये सब सिफ़ारिशें अल्लाह की अनुमति और उसकी इच्छा से होंगी; अन्यथा किसी नबी और किसी फ़रिश्ते की भी ये मजाल नहीं है कि वह अल्लाह की इच्छा के विरुद्ध किसी एक व्यक्ति को भी दोज़ख़ से निकाल सके,या अल्लाह की अनुमति और संकेत पाये बिना किसी के हक़ में सिफ़ारिश के लिए ज़बान खोल सके, पवित्र क़ुरान में है:

﴿مَنْ ذَا الَّذِى يَشْفَعُ عِنْدَهُ إِلَّا بِإِذْنِهِ﴾ [البقرة: 255]

*अनुवाद:" कौन है जो उसके समक्ष बग़ैर उसकी अनुमति के किसी की सिफ़ारिश कर सके"।*

दूसरे अवसर पर कहा गया है:

﴿وَلَا يَشْفَعُونَ إِلَّا لِمَنِ ارْتَضَى﴾ [الأنبياء: 28]

*अनुवाद: "और वे सिफ़ारिश नहीं कर सकेंगे; मगर केवल उसके लिए जिसके लिए उसकी इच्छा हो"।*

## टिप्पणी:

सिफ़ारिश से संबंधित हदीसों के कारण निडर और बेख़ौफ़ होकर गुनाह करने में और अधिक दुस्साहसी होना बड़ा कमीनापन है,हुज़ूर सल्लल्लाहु अलयहि वसल्लम के इन  वचनों का अर्थ ये है कि जो लोग दुर्भाग्य से मन के बहकावे के कारण गुनाह कर बैठें वे भी निराश और नाउम्मीद न हों,मैं उनकी सिफ़ारिश करुंगा; इसलिए वे सिफ़ारिश के पात्र बनने के लिए अल्लाह के साथ अपनी भक्ति के संबंध को और मेरे अनुयायी होने के संबंध को सुधारने की चिंता करें।

# परलोक का आठवां चरण; जन्नत और उसकी नेमतें

परलोक की जिन वास्तविकताओं पर ईमान लाना एक मोमिन के लिए आवश्यक है और जिन पर ईमान लाये बिना कोई व्यक्ति मोमिन व मुस्लिम नहीं हो सकता,उन्हीं में से जन्नत व दोज़ख़ भी है,और यही दोनों स्थान इन्सानों के अंतिम एवं अनंत ठिकानें हैं,पवित्र क़ुरान में जन्नत एवं उसकी नेमतों और दोज़ख़ एवं उसकी कठिनाइयों का इतना अधिक उल्लेख किया गया है और इन दोनों के संबंध में इतना कुछ बयान किया गया है कि अगर इस सिलसिले की सभी आयतों को एक जगह इकट्ठा कर दिया जाये तो केवल इन्हीं से अच्छी ख़ासी एक पुस्तक तैयार हो जायेगी, इसी प्रकार इस विषय पर हदीसें भी बड़ी संख्या में पायी जाती है।

एक हदीस में है कि हज़रत नबी पाक सल्लल्लाहु अलयहि वसल्लम फ़रमाते हैं कि, अल्लाह तआला कहता है कि मैंने अपने सदाचारी बन्दों के लिए वे चीज़ें तैयार की हैं जिनको न किसी आंख ने देखा है,न किसी कान ने सुना है,और न किसी इंसान के दिल में कभी उनकी कल्पना अथवा विचार ही आया है,अगर तुम चाहो तो पढ़ो:

﴿فَلَا تَعْلَمُ نَفْسٌ مَا أُخْفِيَ لَهُمْ مِنْ قُرَّةِ أَعْيُنٍ﴾ [السجدة: 17]

*अनुवाद: "कोई व्यक्ति भी उन नेमतों को नहीं जानता जो उन बन्दों के लिए छुपाकर और सुरक्षित करके रखी गई हैं,जिनमें उनकी आंखों के लिए ठंडक का सामान है"।*

एक दूसरी हदीस में जन्नती औरतों के असाधारण सौंदर्य एवं श्रंगार और उनके वस्त्रों की भव्यता का उल्लेख करते हुए ये फ़रमाया गया है कि: अगर जन्नतवासियों की बीवियों में से कोई औरत पृथ्वी की ओर झांक भी

ले तो इन दोनों के बीच अर्थात जन्नत से पृथ्वी तक रौशनी ही रौशनी हो जाये,महक और सुगंध से भर जाये,और उसके सिर का दोपट्टा ही दुनिया और उसके समूचे धन-दौलत से बेहतर है।(बुख़ारी शरीफ़)

एक और हदीस में जो हज़रत अबू हुरैरा रज़ीअल्लाहु अन्हु की है वह फ़रमाते हैं कि अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलयहि वसल्लम ने फ़रमाया: जन्नत में एक ऐसा पेड़ है कि सवार उसके साये में सौ साल चले तो भी उसको पार न कर सके,और जन्नत में तुममें से किसी के पास कमान के बराबर जगह भी इस सारी सृष्टि से बेहतर है जिस पर सूर्य निकलता और डूबता है।

### टिप्पणी:

इन हदीसों का तात्पर्य दुनिया और उसकी सुख-सुविधाओं की तुलना में जन्नत और उसकी नेमतों की श्रेष्ठता बयान करके उनका शौक़ दिलों में पैदा करना है,इस सिलसिले में पहली बात यह बयान की गई है कि अल्लाह ताला ने जो नेमतें और सुविधाओं के जो सामान अपने बन्दों के लिए जन्नत में पैदा किये है,सांसारिक आनंद एवं सुख-सुविधाओं के सामान से उनकी कोई तुलना ही नहीं,न तो मात्रा व संख्या में,न ही गुणवत्ता एवं श्रेष्ठता में, इस प्रकार जन्नत केवल सुख और संतुष्टि का स्थान है, इसलिए वहां किसी कठिनाई का,न ही किसी बीमारी का गुज़र होगा,न मौत आयेगी, न बुढ़ापा किसी को सतायेगा, न और किसी प्रकार की कोई दिक्कत एवं चिंता का किसी को अनुभव होगा,जन्नती बन्दे जब जन्नत में पहुंचेंगे तो शुरू ही में अल्लाह तआला की ओर से अनंत जीवन एवं स्थायी सुख की ख़ुशख़बरी सुनाकर उनको संतुष्ट कर दिया जायेगा।

### जन्नतवासियों के लिए अल्लाह तआला की स्थायी रज़ामंदी:

हज़रत अबू सईद ख़ुदरी रज़ीअल्लाहु अन्हु बयान करते हैं कि अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलयहि वसल्लम ने फ़रमाया कि अल्लाह तआला

जन्नतवासियों को संबोधित करके कहेंगे ऐ जन्नतवासियों! वे कहेंगे: "لَبَّيْك ربنا وسعدَيْك والخيرُ كلُّه في يدَيْك" अनुवाद: ऐ हमारे मालिक हम उपस्थित हैं, हम उपस्थित हैं, आपके पवित्र दरबार में, और सारे हित एवं भलाई आपके क़ब्ज़े में हैं। फिर प्रश्न होगा; तुम ख़ुश तो हो? वे विनय पूर्वक कहेंगे: ऐ हमारे मालिक! जब आपने हमें यहां वह सब कुछ प्रदान कर दिया जो अपनी सृष्टि में से किसी को नहीं दिया, फिर हम क्यों संतुष्ट एवं ख़ुश न हों। इसके बाद अल्लाह ताला फ़रमाएंगें:क्या मैं इस सबसे बेहतर और श्रेष्ठ एक और चीज़ दूं? बन्दे विनय करेंगे कि परमेश्वर! वह क्या चीज़ है जो इस जन्नत और इसकी नेमतों से भी श्रेष्ठ है? अल्लाह तआला फ़रमाएंगें: मैं अब तुमको अपनी सदा रहने वाली और अनंत रज़ामंदी और प्रसन्नता का उपहार देता हूं, इसके बाद अब मैं तुमसे कभी नाराज़ नहीं होऊंगा। (मिश्कात शरीफ़, पेज : 496)

निस्संदेह! निस्संदेह! अल्लाह तआला की रज़ामंदी एवं प्रसन्नता जन्नत और उसकी समस्त नेमतों से सैकड़ों गुना श्रेष्ठ और बेहतर है, ورضوان من الله أكبر अगर इस रज़ामंदी और प्रसन्नता का लेशमात्र भी प्राप्त हो जाये,तो दुनिया के किसी आनन्द और प्रसन्नता की उससे तुलना और मुक़ाबला नहीं किया जा सकता,अल्लाह तआला सभी ईमान वालों को नसीब फ़रमाए। आमीन

## जन्नत में अल्लाह का दर्शन:

अल्लाह तआला का दर्शन वह सबसे बड़ी नेमत है, जो जन्नतवासियों को मिलेगी, और अल्लाह तआला ने जिन को भी सद्बुद्धि और अच्छा ज़ौक़ दिया है, वे अगर स्वयं अपने मनोभावों में चिंतन करें तो इस नेमत की कामना और तमन्ना अवश्य अपने अन्दर पायेंगे, और क्यों न हो जो बन्दा अपने निर्माता और मालिक की बेशुमार नेमतें इस दुनिया में पा रहा है फिर जन्नत में पहुंचकर इससे लाखों गुणा अधिक नेमतें

पायेगा,उसके दिल में अवश्य ये तमन्ना ये तड़प पैदा होगी कि काश किसी प्रकार मैं अपने दयावान एवं कृपालु मालिक को देख पाता, जिसने मुझे अस्तित्व प्रदान किया, जो मुझ पर इस तरह अपनी नेमतें उंडेल रहा है, बस अगर उसे कभी भी ये दृश्य नसीब न हो तो निश्चित रूप से उसके आनन्द व प्रसन्नता और ऐश में बड़ी ही प्यास रह जायेगी और अल्लाह तआला जिस बन्दे से राज़ी और प्रसन्न होकर जन्नत में दाख़िल करेंगे उसको हरगिज़ प्यासा एवं वंचित नहीं रखेंगे।

ईमान वालों के लिए पवित्र क़ुरान में भी इस सबसे बड़ी नेमत की ख़ुशख़बरी सुनाई गई है, अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलयहि वसल्लम ने भी अपने वचनों में स्पष्ट रूप से इस नेमत की ख़ुशख़बरी दी है और सभी ईमान वालों ने बग़ैर किसी झिझक के इस पर विश्वास किया है।

पवित्र क़ुरान में ईमान वालों के लिए ख़ुशख़बरी है:

﴿وُجُوهٌ يَوْمَئِذٍ نَاضِرَةٌ ۝ إِلَىٰ رَبِّهَا نَاظِرَةٌ ۝﴾ [القيامة: 22-23]

*अनुवादः "जन्नतवासियों के चेहरे उस दिन तरोताज़ा होंगे,वे प्रसन्नचित और हर्षित होंगे और और अपने मालिक को देखते होंगे"*

इसकी तुलना में दूसरे स्थान पर अपराधियों और इंकार करने वालों के बारे में है:

﴿كَلَّا إِنَّهُمْ عَن رَّبِّهِمْ يَوْمَئِذٍ لَّمَحْجُوبُونَ ۝﴾ [المطففين: 15]

*अनुवादः "दुर्भाग्यशाली लोग उस दिन अपने मालिक से रोक दिये जायेंगे"।और उसके दर्शनों और दीदार से रोक दिये जायेंगे।*

जन्नत में अल्लाह तआला के दर्शनों से संबंधित जो हदीसें रसूलुल्ललाह सल्लल्लाहु अलयहि वसल्लम से बयान की गई हैं उनकी प्रमाणिकता निरन्तर रूप से साबित हो चुकी है,जिन पर एक मोमिन को विश्वास करना अनिवार्य और आवश्यक है। उदाहरणतः एक हदीस है:

**عن النبي صلى الله عليه وسلم قال: إذا دَخَلَ أَهْلُ الجَنَّةِ الجَنَّةَ، قالَ: يقولُ اللهُ تَبارَكَ وتَعالَى: تُرِيدُونَ شيئًا أزِيدُكُمْ؟ فيَقولونَ: أَلَمْ تُبَيِّضْ وُجُوهَنا؟ أَلَمْ تُدْخِلْنا الجَنَّةَ، وتُنَجِّنا مِنَ النّارِ؟ قالَ: فَيَكْشِفُ الحِجابَ، فَما أُعْطُوا شيئًا أحَبَّ إليهِم مِنَ النَّظَرِ إلى رَبِّهِمْ عزَّ وجلَّ. وفي رواية: وزادَ ثُمَّ تَلا هذِه الآيَةَ: ﴿لِلَّذِينَ أَحْسَنُوا الحُسْنَى وزِيادَةٌ﴾ (صحيح مسلم: 497-498)**

*अनुवादः "रसूलुल्ललाह सल्लल्लाहु अलयहि वसल्लम ने फ़रमायाः जब जन्नती जन्नत में पहुंच जायेंगे,तो अल्लाह ताला फरमाएंगेः क्या तुम चाहते हो कि मैं तुमको एक चीज़ और प्रदान करूं?वे विनय करेंगेःआपने हमारे चेहरे रौशन किये,दोज़ख़ से बचाकर जन्नत में दाख़िल किया(अब और क्या मनोकामना होगी) हुज़ूर सल्लल्लाहु अलयहि वसल्लम फ़रमाते हैंःयकायक पर्दा उठ जायेगा;बस वे लोग ख़ुदा के चेहरे और उसके सौंदर्य को बेपर्दा देखेंगे,फिर उनका ये हाल होगा कि जो कुछ अब तक उनको मिला था उस सबसे अधिक प्रिय और चहेती चीज़ यही दर्शन की नेमत होगी,फिर आपने ये आयत पढ़ी (لِلَّذِينَ أَحْسَنُوا الحُسْنَى وزِيادَةٌ. يونس: 26) जिन लोगों ने इस दुनिया में अच्छा बंदगी वाला जीवन व्यतीत किया उनके लिए अच्छा स्थान (अर्थात जन्नत और उसकी नेमतें)और उस पर एक और अतिरिक्त नेमत है(यानी परमेश्वर के दर्शन)"।*

अतः सभी मुसलमानों को इसकी प्राप्ति के लिए सदैव तत्पर रहना चाहिए, और अपने सांसारिक जीवन को परलोक की तैयारी के लिए इस्तेमाल करना चाहिए; अतः हमेशा बुराईयों से दूर रहना और अच्छाईयां करना और भलाईयों की तलाश में रहना, एक ईमान वाले की शान होनी चाहिए।

अल्लाह तआला समस्त ईमान वालों को जन्नत एवं उसकी नेमतें,अपनघ रज़ामंदी एवं दर्शन प्रदान करके सम्मानित करे।आमीन

❋ ❋ ❋ ❋ ❋

# परलोक का नवां चरण:दोज़ख़ और उसकी यातनाएं

जिस प्रकार जन्नत से संबंधित क़ुरान की आयतों और रसूलुल्ललाह सल्लल्लाहु अलयहि वसल्लम की हदीसों से पता चलता है कि वहां ऐसा असीम आनन्द एवं परम सुख है कि दुनिया का बड़े से बड़ा आनंद एवं सुख उसकी तुलना में कोई हैसियत नहीं रखता,इसी प्रकार दोज़ख़ से संबंधित क़ुरान व हदीस में जो कुछ बतलाया गया है उससे पता चलता है कि वहां ऐसी कठिनाइयां एवं ऐसे दुःख हैं कि दुनिया के बड़े से बड़े दुःख और कठिनाइयों की उनसे कोई तुलना ही नहीं की जा सकती, और फिर दुनिया की कठिनाइयां एक निश्चित अवधि और कुछ समय के बाद समाप्त हो जाने वाली हैं, जबकि दोज़ख़ के दुःख और कठिनाइयां अनंतकाल तक सदैव रहेंगी; बल्कि वास्तविकता तो यह है कि क़ुरान व हदीस के शब्दों से जन्नत के ऐश और सुख-सुविधाओं और दोज़ख़ के दुःख और यातनाओं की जो कल्पना और जो नक़्शा हमारे दिमागों में स्थापित होता है वह भी वास्तविकता से बहुत अधूरा और कमतर है,और यह इसलिए कि हमारी भाषाओं के सारे शब्द हमारी इस दुनिया की चीज़ों के लिए रचे गये हैं। उदाहरणस्वरूप सेब या अंगूर के शब्दों से हमारा दिमाग़ बस उसी प्रकार के सेबों और अंगूरों की ओर जा सकता है जिनको हमनेदेखा और चखा है, हम जन्नत के उन सेबों और अंगूरों की वास्तविकता और गुणों की कल्पना भी कैसे कर सकते हैं जो अपनी ख़ूबियों में दुनिया के सेबों और अंगूरों से हज़ारों गुणा उन्नत और विकसित होंगे,इसी प्रकार सांप और बिच्छू के शब्दों से हमारा दिमाग़ उसी प्रकार के सांपों और बिच्छुओं की ओर जा सकता है जो हमनें इस दुनिया में देखें हैं,दोज़ख़ के उन सांपों और बिच्छुओं का नक़्शा हमारे दिमाग़ों में कैसे आ सकता है,जो अपनी

शारीरिक संरचना,ख़ौफ़नाकी और ज़हरीलेपन में यहां के सांपों और बिच्छुओं से हज़ारों गुणा बड़े होंगे और कभी हमने उनकी तस्वीर तक नहीं देखी है।

## टिप्पणी:

जन्नत और जहन्नम के संबंध में जो कुछ क़ुरान और हदीस में बयान किया गया है उसका यह तात्पर्य है ही नहीं कि जिन परिस्थितियों से वहां सामना होना है, उनको हम पूर्णतः से यहीं समझ लें, और जान लें और उसका पूरा नक़्शा सही सही हमारे सामने आ जाये; बल्कि इस उल्लेख का असल मतलब "तब्शीर" (ख़ुशख़बरी देना) और "इन्ज़ार" (डराना) है। अर्थात जन्नत का शौक़ और दोज़ख़ का ख़ौफ़ दिलाकर अल्लाह का पसंदीदा और दोज़ख़ से बचाकर जन्नत में पहुंचाने वाला जीवन व्यतीत करने पर अल्लाह के बन्दों को उभारना, और इस लक्ष्य के लिए जन्नत व दोज़ख़ से संबंधित क़ुरान व हदीस का ये उल्लेख काफ़ी है। उदाहरणस्वरूप अल्लाह तआला कहता है:

(1) ﴿وَمَنْ خَفَّتْ مَوَازِينُهُ فَأُولَٰئِكَ الَّذِينَ خَسِرُوا أَنفُسَهُمْ فِي جَهَنَّمَ خَالِدُونَ ﴿١٠٣﴾ تَلْفَحُ وُجُوهَهُمُ النَّارُ وَهُمْ فِيهَا كَالِحُونَ ﴿١٠٤﴾﴾ [المؤمنون: 103-104]

*अनुवादः "जिसका पलड़ा हल्का होगा,तो ये वे लोग होंगे जिन्होंने (कुफ़्र या शिर्क या दुराचार अपनाकर) स्वयं अपना घाटा किया होगा, अतः ये जहन्नम में रहेंगे,इनके चेहरों को आग झुलस देगी,और इनके मुंह उसमें बिगड़े हुए होंगे"।*

(2) ﴿إِنَّا أَعْتَدْنَا لِلظَّالِمِينَ نَارًا أَحَاطَ بِهِمْ سُرَادِقُهَا وَإِن يَسْتَغِيثُوا يُغَاثُوا بِمَاءٍ كَالْمُهْلِ يَشْوِي الْوُجُوهَ﴾ [الكهف: 29]

*अनुवादः "हमने अत्याचारियों के लिए आग तैयार कर रखी है,उसकी क़न्नातें उन्हें घेरे हुए हैं,जब प्यास की दुहाई देंगे तो उसके जवाब में उनको तेल की*

*गाद के मानिंद पानी दिया जायेगा,और(वह भी) इतना जलता और खौलता हुआ कि मुंह को भून डालेगा"।*

(3) ﴿فَالَّذِينَ كَفَرُوا قُطِّعَتْ لَهُمْ ثِيَابٌ مِنْ نَارٍ يُصَبُّ مِنْ فَوْقِ رُءُوسِهِمُ الْحَمِيمُ۝ يُصْهَرُ بِهِ مَا فِي بُطُونِهِمْ وَالْجُلُودُ۝ وَلَهُمْ مَقَامِعُ مِنْ حَدِيدٍ۝ كُلَّمَا أَرَادُوا أَنْ يَخْرُجُوا مِنْهَا مِنْ غَمٍّ أُعِيدُوا فِيهَا وَذُوقُوا عَذَابَ الْحَرِيقِ۝﴾ [الحج: 19-22]

*अनुवाद: "जिन लोगों ने अल्लाह का इंकार किया उनके लिए आग के कपड़े काटे जायेंगे, उनके सिरों के ऊपर से तेज़ गर्म पानी डाला जायेगा,इससे उनके पेट के अन्दर की सब चीज़ें और खालें सब गल जाएंगी,उनके लिए लोहे के हथौड़े होंगे,वहां की तकलीफ़ और कठिनाइयों के कारण जब वे इससे निकलने का प्रयास करेंगे तो फिर उसी में धकेल दिये जायेंगे,और कहा जायेगा यहीं जलने का अज़ाब चखते रहो"।*

(4) ﴿إِنَّ شَجَرَتَ الزَّقُّومِ۝ طَعَامُ الْأَثِيمِ۝ كَالْمُهْلِ يَغْلِي فِي الْبُطُونِ۝ كَغَلْيِ الْحَمِيمِ۝ خُذُوهُ فَاعْتِلُوهُ إِلَى سَوَاءِ الْجَحِيمِ۝ ثُمَّ صُبُّوا فَوْقَ رَأْسِهِ مِنْ عَذَابِ الْحَمِيمِ۝﴾ [الدخان: 43-48]

*अनुवाद: "निस्संदेह ज़क्कूम(थूहर) का पेड़ बड़े पापियों (काफ़िरों)का खाना होगा जो अपनी बदसूरती और घिनावनेपन में तेल की तलछट के मानिंद होगा,पेटों में ऐसा खौलेगा जैसे तेज़ गर्म पानी खौलता है,फ़रिश्तों को आदेश होगा कि इसको पकड़कर और घसीटते हुए दोज़ख़ के बीचों-बीच तक ले जाओ,फिर इसके सिर पर अत्यन्त दर्दनाक जलता हुआ पानी डालो"।*

(5) ﴿وَيُسْقَى مِنْ مَاءٍ صَدِيدٍ۝ يَتَجَرَّعُهُ وَلَا يَكَادُ يُسِيغُهُ وَيَأْتِيهِ الْمَوْتُ مِنْ كُلِّ مَكَانٍ وَمَا هُوَ بِمَيِّتٍ وَمِنْ وَرَائِهِ عَذَابٌ غَلِيظٌ۝﴾ [إبراهيم: 16-17]

*अनुवाद:"उसको ऐसा पानी पीने के लिए दिया जाएगा जो पीप और लहू का होगा, जिसको घूंट-घूंट करके पियेगा और गले में उसको आसानी से उतार न सकेगा,हर दिशा से उस पर मौत झपटेगी परन्तु वह मरेगा भी नहीं,और उसको कड़ी यातनाओं का सामना होगा"।*

**عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ رضي الله عنه، أَنَّ رَسولَ اللَّهِ صَلَّى اللهُ عليه وسلَّمَ، قالَ: نَارُكُمْ جُزْءٌ مِن سَبْعِينَ جُزْءًا مِن نَارِ جَهَنَّمَ، قيلَ يا رَسولَ اللَّهِ! إنْ كَانَتْ لَكَافِيَةً؟ قالَ: فُضِّلَتْ عليهِنَّ بتِسْعَةٍ و سِتِّينَ جُزْءًا كُلُّهُنَّ مِثْلُ حَرِّهَا.** (متفق عليه: بحواله مشكاة شريف:502)

(इस हदीस का उल्लेख बुख़ारी और मुस्लिम दोनों में है, परन्तु शब्द बुख़ारी के हैं)

*अनुवाद: बुख़ारी और मुस्लिम में एक हदीस का उल्लेख मिलता है,हज़रत अबू हुरैरा रज़ीअल्लाहु अन्हु बयान करते हैं कि अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलयहि वसल्लम ने फ़रमाया: तुम्हारी इस दुनिया की आग दोज़ख़ की आग के सत्तरवें हिस्से में से एक हिस्सा है,पूछा गया: ऐ अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलयहि वसल्लम! यही दुनिया की आग पर्याप्त थी? आप सल्लल्लाहु अलयहि वसल्लम ने फ़रमाया: दोज़ख़ की आग दुनिया की आग की तुलना में उनहत्तर गुणा बढ़ा दी गई है,और हर दर्जे की तपिश दुनिया की आग की तपिश के बराबर है।*

## टिप्पणी:

दोज़ख़ की यातनाएं ईमान वालों के लिए चिकित्सालय के मानिंद हैं,जैसे स्वस्थ होने तक मरीज़ अस्पताल में रहता है और ये एक मजबूरी होती है; लेकिन उपचार होने और स्वस्थ होने के उपरांत छुट्टी हो जाती है,इसी प्रकार वे ईमान वाले जिनके गुनाहों के कारण उनको जहन्नम में डाला जायेगा वे गुनाहों का ज़ंग दूर होने तक दोज़ख़ में रहेंगे,और इस ज़ंग से पवित्र और साफ़ सुथरा होने के पश्चात जन्नत में दाख़िल कर दिये जायेंगे।

हां कुफ़्फ़ार और मुश्रिकों के लिए दोज़ख़ अनंत और हमेशा का ठिकाना है,वे सदा के लिए जहन्नम एवं उसकी यातनाओं में रहेंगे। **اللهم احفظنا منها ومن عذابها** (अल्लाह उससे और उसकी यातनाओं से हमारी सुरक्षा करे)

अल्लाह् तआला लेखक, उसके माता-पिता,अध्यापकों, संतों-महापुरुषों,मित्रों और समस्त सगे-संबंधियों को दोज़ख़ और उसकी यातनाओं से बचाकर जन्नत और उसकी नेमतों से गौरवान्वित करें। आमीन या रब्बल आलमीन।

तौह़ीद आलम क़ासमी बिजनौरी

लेक्चरर दारुल उलूम देवबन्द

❋ ❋ ❋ ❋ ❋

❋ ❋ ❋

❋ ❋
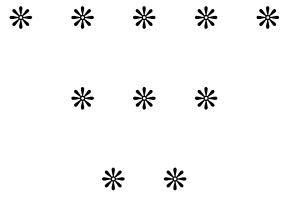
## ہماری دیگر مطبوعات
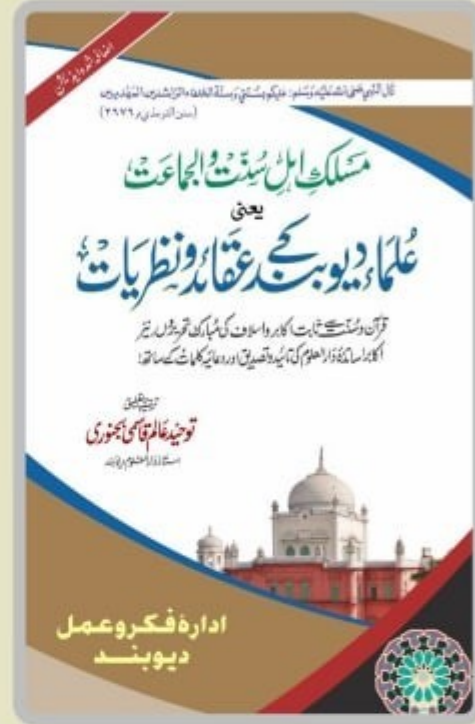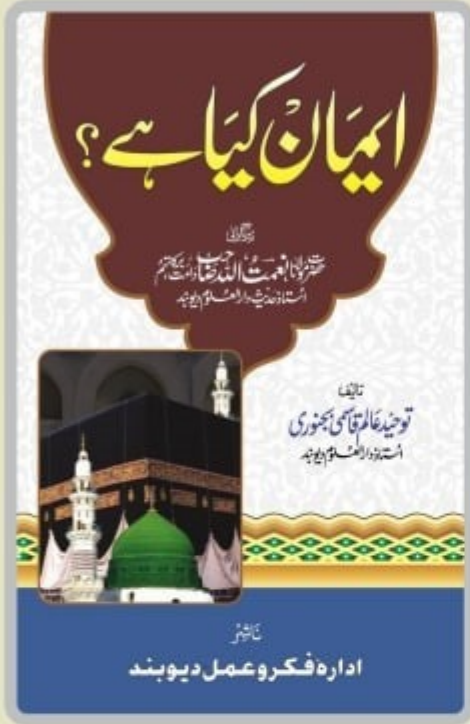
IDARA-E-FIKR-O-AMAL

Deoband-247554 (U.P.)

09760230025